04 - मरीजों की जान का जिम्मेदार कौन?

05 - आध्यात्मिक चेतना का नव प्रभात

A Daily News Magazine

भोपाल

गुरुवार, 19 मार्च, 2026

06 - बैतूल में 98 हजार से ज्यादा कॉपियों का मूल्यांकन पूरा

07 - जोरदार बारिश से होगा नवरात्र का स्वागत!

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 195, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

प्रसंगवश

राष्ट्रीय कैलेंडर के लिये विक्रम संवत् कब तक अस्पृश्य रहेगा?

डॉ. मुरलीधर चांदनीवाला

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का दिन विक्रम संवत् के आरम्भ होने का दिन है। यह दिन विश्व के सबसे पहले गणतंत्र का स्थापना-दिवस होने के साथ-साथ सृष्टि के आरम्भ का भी दिन है। अब से 2083 वर्ष पहले शकों को परास्त कर मालव गणराज्य की जो अविस्मरणीय जीत हुई, उसे राष्ट्रीय गौरव का विषय माना जाता है। घर-घर, द्वार-द्वार गुड़ी बाँधने की परम्परा के कारण यह दिन गुड़ी पड़वा भी कहलाता है। गुड़ी विजयोल्लास की देवी है, नये संवत्सर की शुभ-संदेशवाहिका है। यह नव-संवत्सर की सनातन उषा ही है जो हमारे द्वार पर उत्सव बन कर आ खड़ी होती है।

जिस तरह हिन्दी का राष्ट्रव्यापी वर्चस्व होते हुए भी वह हमारी राष्ट्रभाषा नहीं, उसी तरह विक्रम संवत् का चारों तरफ बोलबाला होते हुए भी वह राष्ट्रीय कैलेंडर नहीं बन सका। हमारा राष्ट्रीय कैलेंडर वर्ष 1957 में घोषित हुआ। दुर्भाग्यवश विक्रम संवत् को नहीं, शक संवत् को राष्ट्रीय कैलेंडर के लिये चुना गया। तब से लेकर अब तक विक्रम संवत् राष्ट्रीय कैलेंडर के लिये अस्पृश्य ही बना हुआ है। बहुत कम लोग जानते हैं कि ऐसा क्यों है? कहा जाता है कि तत्कालीन सरकार ने धर्म-निरपेक्ष सिद्धांतों के दबाव में आकर विक्रम संवत् को पीछे धकेला, और शक संवत् को आगे किया। इस काम को ताकत मिली इस बात से कि शक संवत् ईस्वी सन् की तरह सौर गणना पर आधारित है। राष्ट्रीय कैलेंडर बनाते समय केवल इस बात पर जोर था कि वही संवत् स्वीकार्य हो, जो ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ कदमताल कर सके।

क्या यह दुःख का विषय नहीं, कि सब लोग जिस तिथिपत्र के अनुसार सारे तीज-त्यौहार मनाते हैं, महाकुम्भ जैसा विराट पर्व मनाते हैं, मुहूर्त निकालते हैं, लोक-कला और लोक-संस्कृति से जुड़ते हैं, वह महान् विक्रम संवत् स्वतंत्र भारत में राष्ट्रीय कैलेंडर का हिस्सा नहीं है। सब जानते हैं कि विक्रम संवत् सूर्य की गति पर नहीं, चंद्रमा की कलाओं पर निर्भर है। कृष्ण पक्ष और शुक्ल पक्ष के एक-एक दिन के कलात्मक सौन्दर्य के जादू से हम सब वाकिफ हैं। शक संवत् भले ही राष्ट्रीय पंचांग हो, लेकिन हम पर उसका कोई खास असर नहीं। वह विक्रम संवत् से केवल इक्कीस वर्ष पुराना है। उसे तो उसी दिन हाशिए पर डाल दिया जाना चाहिए था, जिस दिन हमारी संस्कृति पर आक्रमण करने वाले शक पराजित हुए, और विक्रम संवत् की पक्की नींव रखी गई। आश्चर्य है कि शक संवत् बनाये रखा गया। स्वतंत्र भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर एक ओर से ईस्वी सन् को पकड़े हुए है, दूसरी ओर शक संवत् को।

शक और हूणों ने आक्रमण कर हमारे देश को जो हानि पहुँचाई, उसका हिसाब होने से पहले ही हमें दूसरे विदेशी आक्रान्ताओं का सामना करना पड़ा। अंग्रेजों ने भारत पर राज करने के लिये जान-बूझकर शक संवत् को पकड़कर रखा। भारत स्वतंत्र हुआ, तब सत्ताधारियों ने भी उसे छोड़ने का जोखिम नहीं उठाया।

हमारे स्कूलों में इतिहास पढ़ाते समय आज भी ईसापूर्व (बी.सी.) और ईसापश्चात् (ए.डी.) का उल्लेख किया जाता है, जबकि विक्रमादित्य ही ईसा से 57 वर्ष पहले हुए। हमें कालगणना के अपने मानकों का प्रयोग करते रहने में क्या कठिनाई थी, यह समझ से परे है। विक्रम संवत् के आरम्भ को ईसा पूर्व 57 कहने की अपेक्षा विक्रम संवत् 01 कहने में भला क्या अड़चन हो सकती है? हिन्दू संस्कृति की दुहाई देने वालों के परिजनों से और बच्चों से पूछ कर तो देखिए, कि अभी कौन सा संवत् चल रहा है? भगवान् करे, आप निराश हो कर जमीन में न धँस जाएँ।

सम्राट् विक्रमादित्य से ले कर राजा भोज के काल तक की लगभग दस सदियों में सनातन धर्म की शिक्षाओं के चलते हम जिस ऊँचाई पर थे, वह भारतीय इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में दर्ज है। जब-जब शिक्षा में गिरावट आई, समाज का भी पतन हुआ। मैकाले की शिक्षा पद्धति को दोष देकर अपना बचाव करने वाली सरकारें तो आती-जाती रहेंगी, लेकिन हमें वे रास्ते खुले रखने होंगे, जो प्राचीन आचार्यों ने बनाए।

आक्रान्ताओं के अधीन रहने का दुर्भाग्य झेलते हुए हम यहाँ तक आ गये, किन्तु जो आलोक-स्तम्भ हमारे पूर्वज हिन्दू नरेशों ने स्थापित किये थे, वे आज भी हमें आलोकित करते रहते हैं। विक्रम संवत् ने हमें हिन्दू पंचांग ही नहीं दिया, अपितु वर्ष भर चलते रहने वाले तीज-त्यौहारों की सौगात भी दी। यह सौगात नहीं होती, तो हमारी लोक-चेतना न जाने कब टूट कर बिखर जाती।

विक्रम संवत् अपने शुरुआती दौर में कृत संवत् था, कालान्तर में उज्जयिनी के मालव नरेशों की लोकप्रियता के चलते वह मालव संवत् के नाम से जाना गया। राजा भोज के समय के आसपास ही विक्रमादित्य के विरुद को अनंतकाल तक जीवन्त बनाये रखने के लिये लोक में विक्रम संवत् प्रचलित हुआ। महान् हिन्दू सम्राट् विक्रमादित्य ने अपनी सभा के विद्वानों की सहायता ले कर जिस संवत् को मालव-संवत् या कृत संवत् नाम दे कर कालगणना का वटवृक्ष तैयार किया, उसे उनकी लम्बी वंश परम्परा ने सींचा। उसकी छाया में हल जोतते हुए किसान, श्रमिक, व्यापारी, श्रेष्ठी समाज, विप्र समुदाय, योद्धा, चिकित्सक और विद्या के क्षेत्र में अपनी फसल उगाने वाले महारथियों ने नये-नये कीर्तिमान रचे। उन्हीं की बदौलत हमें भारतीय इतिहास का वह स्वर्णयुग मिला, जिस पर आज भी हमें नाज है।

हमारे आचार-विचार विक्रम संवत् के अनुशासन से बँधे हुए रहे हैं। विक्रम संवत् की जीवन-शक्ति और इसकी चमक सबसे निराली है। इस संवत् के मास, पक्ष और तिथियों का आधा-अधूरा ज्ञान होने के बावजूद नयी और पुरानी पीढ़ी के लोग विक्रम संवत् के साथ दिल से जुड़े हुए हैं, क्योंकि हमारे धार्मिक रीति-रिवाज, जन्म-विवाह-मृत्यु से सम्बंधित सामाजिक व्यवहार, दशहरा, दिवाली, होली, रक्षाबंधन सहित सारे पर्व और त्यौहार जिस तिथिपत्र के अनुसार मनाये जाते हैं, वह विक्रम संवत् पर ही निर्भर है।

विद्वानों के मतानुसार विक्रम संवत् ही आधुनिक है। इससे पहले के सप्तर्षि संवत्, युधिष्ठिर संवत्, वीर निर्वाण संवत्, बुद्धनिर्वाण संवत् प्रचलित हैं, किन्तु विक्रम संवत् की जीवन-शक्ति और इसकी चमक के आगे ये सब फीके होते चले गये। विक्रम संवत् ने संवत्सर और कालचक्र के विज्ञान को जीवन के उल्लास से जोड़ कर उस उत्सव-धर्म की नींव रखी, जो हमारे संघर्ष भरे दिनों में भी जीवन का उत्साह बनाये रखने के लिये वरदान सिद्ध हुई है।

हम भारत के लोग दुःख के पहाड़ के नीचे दबे हों, तब भी हँस लेते हैं, नाच लेते हैं, गा लेते हैं। ये वे लोग हैं, जो ज्यादा आधुनिक नहीं हुए, किन्तु उस संस्कृति से जुड़े हुए हैं, जो विक्रम संवत् ने हमें दी।

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

आई है चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा

आओं करें भारतीय नववर्ष का अभिनंदन ।
हवाएं महक रही है, कोयल चहक रही हैं।
लताएं झूम रही हैं, बरखा बरस रही हैं।।

नव सूरज उग आया, नव हैं प्रभात।
चेहरों पर हंसी,उल्लास और खुशी; नव हैं स्वागत।।
फूल धरती के चमन में खिल रहे।
आज दिल से दिल हर तरफ हैं मिल रहे।।

मंदाकिनि प्रेम की हर तरफ बह रही।
स्वर लहरियां कानों में जैसे कुछ कह रही।।
आई है चैत्र शुक्ल वर्ष प्रतिपदा।

- धार्विक नमन 'शौर्य'

नवरात्रि उत्सव के दौरान मां दुर्गा के नौ विभिन्न रूपों का सम्मान एवं पूजा की जाती है। जिसे नवदुर्गा के नाम से भी जाना जाता है। माँ दुर्गा का पहला ईश्वरीय स्वरूप शैलपुत्री है। शैल का अर्थ है शिखर शास्त्रों में शैलपुत्री को पर्वत (शिखर) की बेटी के नाम से जाना जाता है।

शक्ति उपासना का पर्व चैत्र नवरात्रि आज से

नई दिल्ली (एजेंसी)। देवी पूजा का उत्सव चैत्र नवरात्रि आज 19 मार्च से शुरू हो रहा है। ये पर्व 27 मार्च तक चलेगा। चैत्र नवरात्रि के साथ ही हिंदू नववर्ष विक्रम संवत 2083 भी शुरू हो जाएगा। इस बार हिन्दी वर्ष 12 नहीं 13 महीनों का रहेगा, क्योंकि संवत् 2083 में एक अधिकमास भी है।

इलेक्ट्रिक कार के चार्जर में शार्ट सर्किट से एक मकान में भीषण आग से

8 की मौत, 4 घायल

गैस सिलेंडरों में आग लगी, जंगले होने से बचाव में अड़चन, डिजिटल लॉक नहीं खुले

इंदौर। इलेक्ट्रिक कार में चार्जिंग के दौरान शॉर्ट सर्किट होने से आग लग गई। इस आग ने तीन मंजिला मकान को अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में पॉलिमर कारोबारी मनोज पुगलिया, उनकी गर्भवती बहू सिमरन सहित 8 लोगों की मौत हो गई, जबकि 4 लोग घायल हुए। मृतकों में 6 मनोज के रिश्तेदार थे, जो मंगलवार को बिहार के किशनगंज से आए थे। शहर के पूर्वी इलाके के कनाड़िया रोड के नजदीक ब्रजेश्वरी एनेक्स के एक मकान में रात 3.45 बजे भीषण आग लगने की घटना हुई। इस दर्दनाक हादसे में 8 लोगों की मौत हो गई। आग कार के ईवी चार्जर में लगने के बाद पूरे मकान के सामने वाले हिस्से में आग लग गई। इससे परिवार के 12 सदस्य बाहर नहीं निकल पाए। क्योंकि, मकान के चारों तरफ लोहे के जंगले लगे थे इस वजह से वे अंदर ही फंस गए। तीन लोगों को पड़ोसियों की मदद से बचा लिया गया। एक बच्चे का शव नहीं मिलने की भी जानकारी मिली। हादसे के समय घर में परिवार के पांच सदस्य और छह मेहमान मौजूद थे। घर में 10 से ज्यादा गैस सिलेंडर होने और ज्वलनशील सामग्री होने की भी जानकारी मिली।

सूचना मिलते ही पुलिस कमिश्नर सहित अन्य अधिकारी मौके पर पहुंचे। यह घटना ब्रजेश्वरी एनेक्स निवासी मनोज पुगलिया के घर में हुई।

बंगले की तल मंजिल पर कार चार्ज हो रही थी, शॉर्ट सर्किट होने से आग भड़क गई। परिवार के अधिकांश सदस्य ऊपरी मंजिल पर थे, जो नीचे नहीं आ सके। पुलिस आयुक्त को 15 सदस्यीय विशेषज्ञ समिति बनाकर जांच के निर्देश दिए गए हैं।

सिलेंडरों से आग भड़की

कार से घर तक फैली आग ने अंदर रखे गैस सिलेंडरों को अपनी चपेट में ले लिया। एक के बाद एक सिलेंडर फटने लगे, जिससे पूरा इलाका दहल गया। धमाका इतना तेज था कि मकान का एक हिस्सा ढह गया। बिजली सप्लाई बंद होने से घर में लगे डिजिटल लॉक खुल नहीं पाए। अंदर सो रहे लोगों को बाहर निकलने का मौका नहीं मिला। यहां से एक राहगीर मॉर्निंग वॉक पर निकले थे। उन्होंने कार और मकान में लगी आग देखी। शोर मचाया तो लोग बाहर आए। 4 लोग बाहर आ चुके थे। करीब 8 लोग अंदर थे। आसपास के रहवासियों ने बताया कि फायर ब्रिगेड की गाड़ियां सूचना देने के करीब एक घंटे बाद मौके पर पहुंचीं।

पड़ोसियों ने तीन को बचाया

पुलिस आयुक्त संतोष कुमार सिंह ने बताया कि इस घटना में तीन लोगों को बचाया गया। पड़ोसियों ने बचाव अभियान चलाया और तीन लोगों को बचाने में सफल रहे। मनोज पुगलिया, जिनके घर में आग लगी थी, के एक पड़ोसी ने बताया कि पुलिस और दमकल कर्मियों के पहुंचने से पहले ही हमने तीन लोगों को सुरक्षित निकाल लिया था। आग लगने का कारण संभवतः इलेक्ट्रिक वाहन चार्जिंग था। सिंह ने बताया कि प्रारंभिक जांच के अनुसार, घर के बाहर एक इलेक्ट्रिक वाहन चार्ज किया जा रहा था और चार्जिंग पॉइंट में विस्फोट हो गया जिससे आग लग गई। उन्होंने बताया कि इसके बाद आग कार से घर में फैल गई। घर के अंदर 10 से अधिक गैस सिलेंडर भी रखे थे, जिनमें से कुछ में विस्फोट हो गया। अधिकारी के अनुसार, यह घर मनोज पुगलिया का था, जो पॉलीमर का कारोबार करते थे और घर में कुछ ज्वलनशील रसायन भी रखे हुए थे।

इलाज कराने आया, वो भी नहीं बचा

मनोज पुगलिया की पत्नी का भाई कैंसर के इलाज के लिए अपने परिवार के साथ यहां ठहरा था। इस दुखद हादसे में उन्हीं के परिवार के 6 मेहमानों की मौत हो गई। बिहार के किशनगंज निवासी बिजली देवी ने बताया कि विजय सेठिया कॉस्मेटिक कारोबार से जुड़े थे। उन्हें जबड़े में कैंसर था। इसलिए वह ऑपरेशन कराने परिवार के साथ अपनी बेटी-दामाद के घर इंदौर गए थे। पड़ोसी दुकानदार सौरभ ने बताया कि विजय सेठिया इलाज कराने के लिए इंदौर गए थे। हादसे में उनकी पत्नी, बेटे, बहन और बहनोई समेत उनकी भी मौत हो गई। सौरभ के अनुसार, विजय सेठिया की किशनगंज में दो दुकानें हैं। वे इन दिनों अपना नया घर भी बनवा रहे थे। सौरभ ने बताया कि कुछ दिन पहले ही वह इलेक्ट्रॉनिक सामान लेकर उनके घर गए थे। एमजीएम मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ अरविंद घनघोरिया के मुताबिक, 7 लोगों का पोस्टमार्टम हुआ है। दो लोगों को डिस्चार्ज किया गया है। चार लोग सिवियर बर्न हैं।

घर में ज्वलनशील केमिकल

इंदौर के पुलिस कमिश्नर संतोष कुमार सिंह के मुताबिक, यह घर मनोज पुगलिया का था, जो पॉलीमर का कारोबार करते थे। घर में कुछ ऐसे केमिकल भी रखे थे जो ज्वलनशील हैं। शुरुआती जांच में सामने आया है कि इलेक्ट्रिक वाहन के चार्जिंग पॉइंट में विस्फोट से आग लगी, जो कार से होते हुए घर तक फैल गई। घर में 10 से ज्यादा गैस सिलेंडर और ज्वलनशील केमिकल भी रखे थे, जिससे आग और भयावह हो गई। जांच में यह भी सामने आया है कि घर में इलेक्ट्रॉनिक लॉक लगे थे। आग के दौरान बिजली सप्लाई बंद होने से ये लॉक खुल नहीं पाए, जिससे अंदर फंसे लोगों को बाहर निकालना मुश्किल हो गया।

सांस्कृतिक परंपरा, शुभता और नवचेतना का प्रतीक है गुड़ी पड़वा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

ऐतिहासिक महत्व की इस तिथि से ही विक्रम संवत् हुआ आरंभ

● राज्य सरकार द्वारा गुड़ी पड़वा पर अवकाश के साथ सभी जिलों में विशेष आयोजन की व्यवस्था ● मुख्यमंत्री डॉ. यादव को पेशवाई टोपी पेश कर किया अभिनंदन ● मुख्यमंत्री को प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए मराठी भाषियों के समूहों ने भेंट की गुड़ी ● मुख्यमंत्री ने मराठी कला, साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में सक्रिय संस्थाओं का किया सम्मान

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारी सांस्कृतिक परंपरा, शुभता और नवचेतना का प्रतीक गुड़ी पड़वा हमें नए संकल्प लेने, अपने जीवन में लक्ष्यों को अपनाने और समृद्धि की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देता है। गुड़ी पड़वा हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ता है। हमें एकता, सद्भाव और समृद्धि का संदेश देता है। यह दिन नए संकल्प लेने और सकारात्मक ऊर्जा के साथ जीवन को आगे बढाने का अवसर प्रदान करता है। चैत्र प्रतिपदा नव संवत्सर का यह पर्व प्रकृति की हरितिमा और नवजीवन का प्रतीक है। यह समय दो ऋतुओं का संधि काल है,

जिसमें प्रकृति नया रूप धारण करती है। यह तिथि ऐतिहासिक भी है, इसी दिन सम्राट विक्रमादित्य ने विक्रम संवत् का प्रारंभ किया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव समग्र मराठी समाज द्वारा मुख्यमंत्री निवास में नव वर्ष गुड़ी पड़वा पर्व के आरंभ के प्रतीक स्वरूप आयोजित कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव का इस अवसर पर ढोल ताशें के साथ परंपरागत रूप में स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव का अभिनंदन करते हुए उन्हें पेशवाई टोपी पेश की। इसके साथ ही उन्हें पटका और प्रतीक स्वरूप छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा भेंट की गई।

गुड़ी पड़वा उत्साह और उमंग का पर्व

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि सनातन संस्कृति की ध्वजा हर काल और हर युग में हमारी पहचान रही है। हमने कई आक्रांताओं का सामना किया, लेकिन कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी। सम्पूर्ण विश्व भारतीय संस्कृति और परंपरा के महत्व को स्वीकार करती है। भगवा ध्वज और तिरंगे के साथ युद्ध काल में अपने स्वाभिमान और देश के गौरव की रक्षा के अनेक उत्कृष्ट उदाहरण इतिहास में मौजूद हैं। गुड़ी पड़वा और नववर्ष सभी के लिए उत्साह, उमंग और आनंद का पर्व है। इसीलिए राज्य सरकार ने इस पर्व पर अवकाश घोषणा की है। गुड़ी पड़वा अर्थात चैत्र नवरात्रि के पहले दिन मंत्रीगण अपने प्रभार के जिलों में सूर्य को नमन करने के साथ गुड़ी पड़वा उत्सव के आयोजनों में सहभागिता करेंगे।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 20 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 19 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

असम चुनाव से पहले कांग्रेस को लगा एक तगड़ा झटका

भाजपा में शामिल हुए सांसद बोरदोलोई

नई दिल्ली (एजेंसी)। असम में विधानसभा चुनाव से पहले कांग्रेस पार्टी को बड़ा झटका लगा है। कांग्रेस के लोकसभा सांसद प्रद्युत बोरदोलोई बुधवार को असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा और भाजपा के अन्य नेताओं की मौजूदगी में

भाजपा में शामिल हो गए। कांग्रेस के इस वरिष्ठ नेता ने मंगलवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया था। सरमा ने पत्रकारों को बताया कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नबीन ने मंगलवार को बोरदोलोई के पार्टी में शामिल होने को मंजूरी दे दी थी। असम के मुख्यमंत्री ने कहा, आज, कांग्रेस के मौजूदा सांसद प्रद्युत बोरदोलोई भाजपा में शामिल हो गए हैं। हमारे प्रदेश अध्यक्ष दिलीप सैकिया ने पार्टी में उनका स्वागत किया है।

खालिस्तान समर्थकों का भारत विरोधी प्रदर्शन

किल मोदी पॉलिटिक के नारे लगाए

लुधियाना (एजेंसी)। खालिस्तान समर्थक कनाडा और अमेरिका में भारत विरोधी गतिविधियां चला रहे हैं। अमेरिका में सिख फॉर जस्टिस से जुड़े समर्थकों ने अमेरिका में प्रदर्शन किया और भारत विरोधी नारे लगाए। खालिस्तान समर्थकों ने किल मोदी पॉलिटक के नारे लगाए। वहीं कुछ दिन पहले किए

गए प्रदर्शन के दौरान खालिस्तान समर्थकों ने इंडियन प्रोडक्ट के साथ-साथ इंडियन एयरलाइंस, शॉप्स व आउटलेट का बायकॉट करने का ऐलान भी किया। अमेरिका में इन दिनों खालिस्तान समर्थक खालिस्तान रेफरेंडम करवा रहे हैं और इसके लिए अलग-अलग शहरों में प्रदर्शन कर रहे हैं। इस दौरान वो भारत विरोधी नारे लगाकर लोगों को अपने रेफरेंडम (जनमत संग्रह) में शामिल होने की अपील भी कर रहे हैं।

पाकिस्तान को सस्ता तेल देने को तैयार हुआ रूस

पाक के पास सिर्फ 11 दिन का ऑयल रिजर्व

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान में रूसी राजदूत अल्बर्ट खोरेव ने कहा है कि रूस पाकिस्तान को सस्ता तेल देने के लिए तैयार है। लेकिन अभी तक पाकिस्तान की तरफ से इस बारे में कोई आधिकारिक मांग नहीं की गई है। उन्होंने कहा कि अगर पाकिस्तान खुद पहल करता है, तो रूस उसे कम कीमत पर तेल सप्लाई कर सकता है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, रूसी

कच्चे तेल की कीमत करीब 70 से 76 डॉलर प्रति बैरल है, जबकि अंतरराष्ट्रीय बाजार में यही कीमत 95 से 105 डॉलर प्रति बैरल के बीच है। वहीं, पाकिस्तान के पेट्रोलियम सचिव ने संसद की एक समिति को बताया कि देश के पास फिलहाल सिर्फ 11 दिन का कच्चा तेल बचा है। वहीं, पेट्रोल 321 रुपए (पाकिस्तानी रुपए) और डीजल 335 रुपए प्रति लीटर मिल रहा है। पाकिस्तान सरकार ईरान से बात कर रही है ताकि होर्मुज स्ट्रेट से तेल लाने की इजाजत मिल सके। अगर मंजूरी मिलती है, तो पाकिस्तान के चार जहाज इस रास्ते से तेल ला सकते हैं।

4 मंजिला बिल्डिंग में लगी आग, 9 लोगों की मौत

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के पालम स्थित साध नगर में एक रिहायशी 4 मंजिला बिल्डिंग में बुधवार सुबह करीब 7 बजे भीषण आग लग गई। हादसे में 9 लोगों की मौत हो गई, जिनमें 3 नाबालिग लड़कियां शामिल हैं। 2 लोगों ने जान बचाने के लिए बिल्डिंग से छलांग लगा दी। दोनों को गंभीर चोटें आई हैं। दिल्ली फायर सर्विस के कर्मियों ने 10 लोगों का रेक्स्यू किया है। इनमें 3 लोग घायल हैं। करीब 30 फायर ब्रिगेड मौके पर मौजूद हैं। आग पर काबू पा लिया गया है। फिलहाल आग लगने के कारणों का पता नहीं चल पाया है। स्थानीय लोगों के अनुसार, आग शॉर्ट सर्किट के कारण लगी और तेजी से फैल गई। इमारत में उस समय 10-15 लोग मौजूद थे। इनमें कुछ शव बरामद किए जा चुके हैं। मृतकों की संख्या बढ़ने की आशंका है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, बिल्डिंग के बेसमेंट, ग्राउंड और फर्स्ट फ्लोर पर कपड़े और कॉस्मेटिक सामान के स्टोरेज के लिए किया जा रहा था। सेकेंड और थर्ड फ्लोर पर लोग रहते थे। चौथे फ्लोर पर एक टिन शेड बना हुआ था। आग की लपटें वहां तक पहुंच गई थीं। घटना में मारे गए 8 लोगों के शव मणिपाल अस्पताल और एक महिला का शव अस्पताल लाया गया था। घायलों में दो का इलाज अस्पताल में चल रहा है।

पीएम ने मृतकों के परिजन को 2-2 लाख मुआवजे का ऐलान किया

पालम और इंदौर हादसे पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शोक जताते हुए मुआवजे का ऐलान किया है। प्रधानमंत्री ने कहा कि हादसे में जान गंवाने वालों के परिजनों को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष से 2 लाख की आर्थिक सहायता दी जाएगी, जबकि घायलों को 50 हजार दिए जाएंगे। इस बीच कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने भी घटना पर दुख जताया और पार्टी कार्यकर्ताओं से पीड़ितों की मदद करने की अपील की।

सीधी में मिले 2.5 लाख साल पुराने हाथी के जीवाश्म

सतना की वैज्ञानिक टीम ने खोजे प्रोबोसिडियन कुल के अवशेष, प्रशासन से संरक्षण की मांग

सतना (नप्र)। सीधी जिले के सिहावल ब्लॉक स्थित कोरौली कला गांव की अतरैला पहाड़ी में प्राचीन प्रोबोसिडियन कुल (हाथियों के पूर्वज) के जीवाश्म अवशेष मिले हैं। पीएमश्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, सतना की वैज्ञानिक टीम के प्रारंभिक सर्वेक्षण में यह दावा किया गया है। इन जीवाश्मों की आयु लगभग 25 हजार से ढाई लाख वर्ष पुरानी हो सकती है। टीम ने सीधी जिला प्रशासन से इन महत्वपूर्ण साक्ष्यों को तुरंत संरक्षित करने की मांग की है।

प्राणी शास्त्र विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. हर्षित सोनी के नेतृत्व में डॉ. ऋषभ देव साकेत और पुरातत्वविद डॉ. धीरेंद्र शर्मा की टीम ने इस जगह का दौरा किया। स्थल परीक्षण के दौरान वैज्ञानिक दल को बड़े आकार के शाकाहारी स्तनधारी जीवों के दांतों के टुकड़े और कुछ अस्थि खंड मिले हैं।

इन दांतों में एनामेल प्लेट, डेंटिन और घिसाव के निशान साफ दिख रहे हैं। यह निशान प्रारंभिक रूप से हाथी कुल (प्रोबोसिडियन) के प्राचीन जीवों की ओर इशारा करते हैं।

डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी बने सीआईआई मप्र के चेयरमैन

भोपाल। भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा मध्य प्रदेश स्टेट एनुअल मीटिंग 2026 का आयोजन इंदौर स्थित ब्रिलियंट कन्वेंशन सेंटर में किया गया। इस महत्वपूर्ण आयोजन में राज्यभर से उद्योगपतियों, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लेकर प्रदेश के औद्योगिक और आर्थिक विकास के भविष्य पर विचार-विमर्श किया।

आईसेक्ट लिमिटेड के निदेशक डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी को वर्ष 2026-27 के लिए सीआईआई मध्य प्रदेश का चेयरमैन नियुक्त किया गया, जबकि कृति न्यूट्रीएंट्स लिमिटेड के निदेशक सौरभ सिंह मेहता को वाइस चेयरमैन नियुक्त किया गया है।

शिक्षा, कौशल विकास और उद्योग-सरकार समन्वय के क्षेत्र में अपने व्यापक अनुभव के साथ डॉ. सिद्धार्थ चतुर्वेदी का नेतृत्व मध्य प्रदेश में औद्योगिक विकास, नवाचार और सहयोगात्मक पहल को नई दिशा देगा।

रायपुर-रीवा विमान सेवा के लिए छत्तीसगढ़ में निवासरत विंध्यवासियों ने उप मुख्यमंत्री शुक्ल का किया अभिनंदन

भोपाल। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल से स्टेट गेस्ट हाउस रायपुर में छत्तीसगढ़ में निवासरत विंध्य क्षेत्र के नागरिकों के प्रतिनिधिमंडल ने आत्मीय भेंट की। इस अवसर पर उपस्थित विंध्यवासियों ने रीवा-रायपुर विमान सेवा प्रारंभ किए जाने पर हर्ष व्यक्त करते हुए उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल का आभार व्यक्त करते हुए अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि इस विमान सेवा के प्रारंभ होने से विंध्य क्षेत्र और छत्तीसगढ़ के बीच आवागमन अत्यंत सुगम हो गया है, जिससे विंध्यवासियों को बड़ी सुविधा मिलेगी। उपस्थित विंध्यवासियों ने कहा कि उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल के नेतृत्व में विंध्य क्षेत्र तेज गति से विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है।

गीता के मंत्र से परीक्षा के तनाव से मुक्ति : प्राचार्य गोस्वामी

भोपाल। सरोजिनी नायडू शासकीय कन्या स्नातकोत्तर (स्वशासी) महाविद्यालय, शिवाजी नगर, भोपाल (एसएनजीसी) के प्राचार्य डॉ सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी ने कहा है कि परीक्षा के तनाव से मुक्त होने के लिए गीता के मंत्र का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। वे यहाँ अर्थशास्त्र विभाग द्वारा छात्राओं के लिए—परीक्षा की तैयारी और तनाव प्रबंधन—विषय पर आयोजित व्याख्यान को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने छात्राओं को तनाव मुक्त रहने के लिए श्रीमद्भगवत गीता के श्लोक—कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर—का मूल मंत्र दिया और कहा कि हमें अपने अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आपने युवाओं में बढ़ते तनाव के दुष्परिणामों से भी छात्राओं को आगाह किया और तनावमुक्त रहने के लिए इस तरह के कार्यक्रमों की महत्ता पर प्रकाश डाला। व्याख्यान में विषय-विशेषज्ञ के रूप में भूगोल की विभागाध्यक्ष डॉ कुसुम माथुर एवं मनोविज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ संतोष रलवानिया ने छात्राओं को परीक्षा की तैयारी करने एवं तनाव मुक्त रहने के उपायों के बारे में मार्गदर्शन किया। अर्थशास्त्र की विभागाध्यक्ष डॉ अर्चना गौड़ ने भी छात्राओं को संबोधित किया। कार्यक्रम का संचालन किया डॉ. प्रीति पचौरी ने। इस अवसर पर अर्थशास्त्र विभाग के समस्त प्राध्यापक उपस्थित रहे। व्याख्यान से लगभग 250 छात्राएँ लाभान्वित हुईं।

श्रीति राशिनकर को महाराष्ट्र का राज्य स्तरीय जाधव स्मृति सम्मान

इंदौर। हिंदी मराठी की कवियत्री श्रीति राशिनकर को हाल ही में महाराष्ट्र के राज्य स्तरीय काव्य लेखन स्पर्धा में अपने उत्कृष्ट लेखन के लिए सम्मानित किया गया है। अरुण इंगवले और संतोष गोनबरे ने बताया कि चिपळूण की महाराष्ट्र साहित्य परिषद और कोकण मराठी साहित्य परिषद द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित ज्येष्ठ नाटककार अप्पा साहेब जाधव स्मृति प्रीत्यर्थ अभिनव राज्यस्तरीय काव्य स्पर्धा का आयोजन किया गया था। मराठी के अग्रज कवि मर्ढेकर की चर्चित कविता की पंक्ति 'गणपत वाणी' को केंद्र में रख कविताएं आमंत्रित की गई थीं, जिसमें देश विदेश से तकरीबन साढ़े पांच सौ कवियों ने सहभागिता की थी। निर्णायक समिति ने इन कविताओं में से जिन आठ कवियों को सम्मानित किया उनमें मध्यप्रदेश से श्रीति राशिनकर को यह सम्मान प्राप्त हुआ है। उल्लेखनीय है कि लेखन, पत्रकारिता, संचालन में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाली श्रीति इसके पूर्व भी अनेक सम्मानों से सम्मानित हो चुकी हैं।

राजस्थान में तेल से भरा टैंकर पलटा, लगी आग

- नेशनल हाईवे पर 200 मीटर दूर तक लपटें फैली
- ड्राइवर जिंदा जला, हेल्पर ने कूदकर जान बचाई

जालोर (एजेंसी)। राजस्थान के जालोर जिले में जैसलमेर-जामनगर नेशनल हाईवे पर तेल टैंकर पलट गया और उसमें आग लग गई। इसके बाद सड़क पर 200 मीटर तक लपटें फैल गई। टैंकर का ड्राइवर जिंदा जल गया,

जबकि हेल्पर समय रहते कूद गया। हादसा बुधवार दोपहर करीब 2 बजे हुआ। फायर ब्रिगेड ने 1 घंटे बाद आग पर काबू पा लिया। जानकारी के अनुसार, टैंकर बाड़मेर से गुजरात की तरफ जा रहा था। इस दौरान सिंवाड़ा ओवरब्रिज पर पलट गया। हादसे के बाद मौके पर बड़ी संख्या में लोग जमा हो गए। सांचौर एसडीएम प्रमोद कुमार और सिंवाड़ा चौकी पुलिस मौके पर पहुंची।

ईरान-इजराइल युद्ध के बीच पीएम की तेल संकट पर चर्चा

मोदी ने पेट्रोलियम मंत्री हरदीप पुरी के साथ की बैठक

राज्यों को 10 फीसदी एक्स्ट्रा एलपीजी कोटा मिलेगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान-इजराइल जंग के बीच देश में फ्यूल-गैस की सप्लाई को लेकर पीएम नरेंद्र मोदी ने बुधवार को संसद भवन में पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी के साथ बैठक की। इसमें कच्चे तेल और गैस की उपलब्धता, उनके इम्पोर्ट और संभावित संकट से निपटने की रणनीति पर चर्चा की गई। करीब 2 घंटे चली बैठक में सरकार ने अपने आपातकालीन तेल भंडार की भी समीक्षा की है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। अधिकारियों के मुताबिक देश के पास कुछ हफ्तों का तेल स्टॉक मौजूद है, जिससे फिलहाल संकट की संभावना कम है। वहीं अधिकारी सुजाता शर्मा ने कहा कि राज्यों को 10 फीसदी ज्यादा एलपीजी देने का ऑफर दिया गया है।

- सरकार की अपील- एलपीजी की जगह पीएनजी अपनाएं- पेट्रोलियम मंत्रालय की अधिकारी ने बताया कि आज 93 फीसदी एलपीजी बुकिंग ऑनलाइन हुई है। सरकार ने लोगों से कहा है कि एजेंसी पर जाने से बचें और सिर्फ आधिकारिक ऐप या वेबसाइट से ही बुकिंग करें, अफवाहों पर ध्यान न दें। उन्होंने बताया कि कालाबाजारी रोकने के लिए सरकार सख्ती कर रही है। इसी के तहत मंगलवार को देशभर में 2300 से ज्यादा दुकानों पर जांच की गई।

देवगौड़ा ने मोहब्बत हमसे की और शादी मोदी से

- खड़गे ने पूर्व पीएम से कहा तो हंसने लगे मोदी

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के उच्च सदन राज्यसभा से बुधवार को कई सांसद रिटायर हो गए। उनकी विदाई के दौरान राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे ने सदन में कहा कि नेता कभी रिटायर नहीं होते। वो

राजनीति में, पब्लिक लाइफ में, देश सेवा के जुनून में न तो थकते हैं और न ही रिटायर होते हैं। इसी दौरान पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवगौड़ा के बारे में बोलते हुए खरगे ने अहम टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि मोहब्बत हमारे साथ की, लेकिन शादी मोदी साहब के साथ ऐसा क्यों हुआ मुझे नहीं पता इस पर पीएम मोदी हंसने लगे।

- ईरान के इंटेलीजेंस मिनिस्टर पर इजराइल का दावा

इस्माइल खातिब को मारा

- इजराइल ने ईरान को दे दिया एक और तगड़ा झटका

तेल अवीव (एजेंसी)। इजरायल ने ईरान के रक्षा प्रमुख अली लारीजानी की हत्या के बाद ईरानी इंटेलीजेंस मिनिस्टर इस्माइल खातिब को भी मार गिराया है। इसकी पुष्टि इजरायली रक्षा मंत्री इजराइल कैट्ज ने की है। हालांकि, इजरायल डिफेंस फोर्सेज ने अभी तक स्ट्राइक को कन्फर्म करने वाला कोई स्टेटमेंट जारी नहीं किया है। इससे एक दिन पहले इजरायल ने तेहरान

में हमला कर ईरान के रक्षा प्रमुख अली लारीजानी को मार गिराया था। इजरायली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने लारीजानी को गुंडों का सरगना बताया था। उनकी मौत के बाद गुस्साए ईरान ने इजरायल पर क्लस्टर बमों से हमला किया है। यरूशलम पोस्ट ने ईरानी सूत्रों के हवाले से मंगलवार रात हुए इजरायली हमले में ईरानी इंटेलिजेंस मिनिस्टर इस्माइल खातिब की मौत की जानकारी दी है। एक सूत्र ने बताया है कि इजरायली स्ट्राइक सफल रही है।

ईरान-इजरायल-अमेरिका

नाटो ने छोड़ा साथ तो होर्मुज में फंस गया अमेरिका

ईरान ने होर्मुज में पलट दी बाजी, शान से निकले भारतीय झंडे लगे टैंकर

वॉशिंगटन/तेहरान (एजेंसी)। अमेरिका और इजरायल के ईरान पर हमले को 19 दिन बीत चुके हैं, लेकिन अभी इसके जल्द खत्म होने के आसार नहीं दिख रहे हैं। अमेरिका और इजरायल ने ईरान में शासन के बदलाव पर जोर दिया है, वहीं सुप्रीम लीडर अली खामेनेई की मौत के बाद भी ईरान ने झुकने से इनकार कर दिया है। इस बीच ईरान होर्मुज स्ट्रेट से होने वाली अंतरराष्ट्रीय शिपिंग पर हमला करके वैश्विक ऊर्जा सप्लाई को हिला दिया है। होर्मुज संकट एक ऐसा मुद्दा

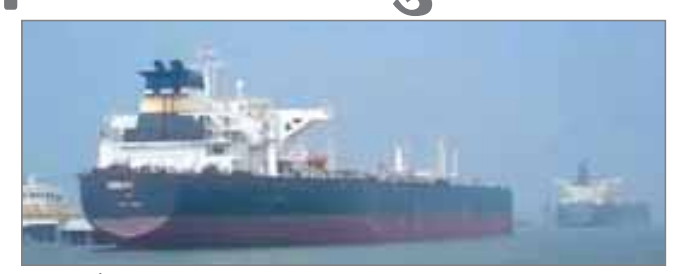

बन गया है जिसमें अमेरिका फंस गया है। ईरान युद्ध में अमेरिका के नाटो सहयोगियों से उसका साथ छोड़ दिया है, और वॉशिंगटन के पास इजरायल के सिवा कोई नहीं है। होर्मुज स्ट्रेट अमेरिका के लिए इतनी बड़ी मुश्किल बन गया है कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को इसे खुलवाने के लिए चीन से मदद मांगने को मजबूर होना पड़ा। वहीं भारत के जहाज झंडे के साथ निकल रहे हैं।

- होर्मुज में ईरान के आगे अमेरिका का दांव फेल- एक्सपर्ट का कहना है कि ईरान पर अमेरिका और पश्चिमी देशों ने लंबे समय से प्रतिबंध लगाए हुए हैं। ऐसे में उसने बचने के लिए ऐसे तरीके विकसित कर लिए हैं। इनमें शैडो फ्लीट तैयार करना प्रमुख है। मिडिल ईस्ट आई ने के को-फाउंटर समीर मदानी के हवाले से बताया कि युद्ध शुरू होने के बाद से ईरान हर दिन 1.02 मिलियन बैरल तेल निर्यात करने में सफल रहा है। इसका ज्यादातर हिस्सा चीन को जाता है। बीते साल में ईरान का तेल निर्यात का औसत 1.69 मिलियन बैरल प्रतिदिन था। यह दिखाता है कि ईरान के तेल निर्यात पर बहुत ज्यादा असर नहीं पड़ा है। ईरान अब खाड़ी में मौजूद अमेरिका के सहयोगी के मुकाबले ज्यादा कच्चा तेल बाहर भेज रहा है।

छत्तीसगढ़ के विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने की सौजन्य भेंट

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने रायपुर प्रवास के दौरान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह के निवास पर आज सौजन्य भेंट की। उन्होंने विभिन्न समसामयिक विषयों पर चर्चा की। इस अवसर पर अन्य जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

गेहूँ खरीदी में किसानों को नहीं होगी परेशानी : मंत्री कंषाना

भोपाल (नप्र)। किसान कल्याण तथा कृषि विकास मंत्री श्री एदल सिंह कंषाना ने कहा है कि राज्य सरकार ने रबी विपणन वर्ष 2026-27 के लिए किसानों के हित में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हुए समर्थन मूल्य पर गेहूँ खरीदी की तैयारियाँ पूर्ण कर ली हैं। प्रदेश में गेहूँ उपार्जन कार्य चरणबद्ध रूप से प्रारम्भ किया जाएगा। गेहूँ खरीदी में किसानों को बिल्कुल परेशानी नहीं होगी।

मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि इंदौर, उज्जैन, भोपाल एवं नर्मदापुरम संभागों में गेहूँ खरीदी 1 अप्रैल 2026 से शुरू होगी, जबकि शेष संभागों में 7 अप्रैल 2026 से खरीदी प्रारम्भ की जाएगी। गेहूँ उपार्जन शासकीय कार्य दिवसों में प्रतिदिन सुबह 8 बजे से रात 8 बजे तक किया जाएगा, जिससे किसानों को सुविधाजनक समय मिल सके। राज्य सरकार ने किसानों को अतिरिक्त लाभ देने के उद्देश्य से गेहूँ खरीदी पर 40 रुपये प्रति क्विंटल बोनस

देने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही अब किसानों से गेहूँ की खरीदी 2625 रुपये प्रति क्विंटल की दर से की जाएगी।

मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि रबी विपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर गेहूँ उपार्जन के लिये प्रदेश के कुल 19 लाख 4 हजार 651 किसानों ने पंजीयन कराया है, जो पिछले वर्ष के 15 लाख 44 हजार किसानों की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। यह किसानों का सरकार की नीतियों पर बढ़ता विश्वास दर्शाता है।

मंत्री श्री कंषाना ने कहा कि सरकार किसानों की सुविधा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। सभी खरीदी केंद्रों पर किसानों के लिए ठंडे पेयजल, पंखों, छाया तथा आवश्यक सुविधाओं की समुचित व्यवस्था की जा रही है, जिससे किसानों को धूप में खड़े होकर किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

मध्य प्रदेश में बड़ी प्रशासनिक सर्जरी की तैयारी

8 जिलों के कलेक्टरों पर गिर सकती है गाज

भोपाल से दिल्ली तक सुगबुगाहट

भोपाल (नप्र)। राज्य सचिवालय यानी वल्लभ भवन में इन दिनों फाइलों की आवाजाही बढ़ गई है। खबर है कि प्रदेश की प्रशासनिक मशीनरी में एक बड़ी सर्जरी होने वाली है। यह फेरबदल लंबे समय से उधार था, लेकिन पहले मतदाता सूची के पुनरीक्षण और फिर बजट सत्र की व्यस्तता के कारण इसे टाल दिया गया था। अब जब विधानसभा की

कार्यवाही निपट चुकी है, तो सरकार का पूरा फोकस उन अधिकारियों को इधर-से-उधर करने पर है जो जिलों की कमान संभाले हुए हैं।

तबादलों का थ्री-ईयर रूल

सूत्रों की मानें तो इस बार उन कलेक्टरों पर गाज गिरना तय है जिन्होंने एक ही जिले में तीन साल का कार्यकाल पूरा कर लिया है। 14 फरवरी को हुए पिछले फेरबदल में केवल 11 अधिकारियों को हिलाया गया था, लेकिन वह बदलाव ज्यादातर सचिवालय स्तर तक सीमित था। इस बार की सर्जरी सीधे ग्राउंड जीरो यानी जिलों पर असर डालेगी।

क्यों अटका था अब तक यह फेरबदल?

प्रशासनिक गलियारों में चर्चा है कि यह लिस्ट बहुत पहले आ जाती, लेकिन दो मुख्य कारणों ने इसे रोक रखा था। पहला तो राज्य भर में मतदाता सूचियों के पुनरीक्षण का काम चल रहा था। इस दौरान ट्रांसफर के लिए चुनाव आयोग की मंजूरी अनिवार्य होती है, जिससे बचने के लिए सरकार ने इंतजार किया। दूसरा विधानसभा के बजट सत्र के दौरान सभी वरिष्ठ अधिकारियों की मौजूदगी राजधानी में जरूरी थी, ताकि वे विधायकों के सवालों के जवाब तैयार कर सकें।

अब आगे क्या ?

मुख्यमंत्री और मुख्य सचिवकी पहली दौर की चर्चा पूरी हो चुकी है। लिस्ट लगभग फाइनल है। माना जा रहा है कि कम से कम 8 जिलों के कलेक्टर बदले जाएंगे। कुछ को पदोन्नत कर मंत्रालय बुलाया जाएगा, तो कुछ को एक जिले से हटाकर दूसरे जिले की कमान सौंपी जाएगी। प्रशासनिक हलकों में इसे सर्जरी इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि यह बदलाव केवल चेहरों का नहीं, बल्कि कार्यशैली को बदलने की कोशिश है।

पिछली सर्जरी का असर

पिछली बार जब 14 फरवरी को ट्रांसफर लिस्ट आई थी, तो उसका असर केवल मंत्रालय के भीतर के विभागों में दिखा था। तब से ही जिलों के कलेक्टर अपनी कुर्सी बचाने या मनचाही पोस्टिंग पाने के लिए लॉबिंग कर रहे थे। अब जब परफॉर्मेंस को ही एकमात्र हथियार बनाया गया है, तो कई दिग्गज अफसरों की धड़कनें बढ़ी हुई हैं।

जेके यूनिवर्सिटी और अस्पताल को बम से उड़ाने की धमकी

- फेक निकली भोपाल में कोर्ट-यूनिवर्सिटी को उड़ाने की धमकी
- मेल करने वाले ने लिखा- जौहर की नमाज के बाद होंगे सीरियल ब्लास्ट

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल स्थित एक और यूनिवर्सिटी को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। इससे पहले भी कई स्थानों को बम से उड़ाने की धमकी मिल चुकी हैं जो पूरी तरह झूठी निकली। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार भोपाल के जेके अस्पताल और विश्वविद्यालय को बम से उड़ाने की धमकी दी गई है। यह ईमेल प्रबंधन को प्राप्त हुआ है। जिसमें कहा गया है कि परिसर में 21 स्थानों पर बम लगाए गए हैं और इनके जरिए इमारत को उड़ा दिया जाएगा।

मौके पर पहुंची डॉग स्क्वायड की टीम- यह धमकी मिलने के बाद प्रबंधन ने पुलिस को सूचना दी। परिणामस्वरुप बम निरोधक दस्ता और डॉग स्क्वाड मौके पर पहुंचा। तलाशी अभियान चलाया जा रहा है लेकिन अब तक कोई भी संदिग्ध वस्तु अस्पताल और विश्वविद्यालय परिसर में नहीं मिली है। इससे पहले राजधानी के पीपल्स विश्वविद्यालय, एम्स अस्पताल और नापतौल विभाग को भी बम से उड़ाए जाने की धमकी मिल चुकी है।

दो दिन तक मिली थी धमकी- वहीं, नापतौल विभाग को तो लगातार दो दिन तक इसी तरह की धमकियां मिली और इसका असर सरकारी कामकाज पर भी पड़ा क्योंकि दोनों ही बार इमारत को खाली कराया गया। पुलिस ने तलाशी अभियान चलाया, मगर कुछ भी नहीं मिला कुल मिलाकर धमकी झूठी निकली। वहीं, कर्मचारी काम करने के लिए आसानी से तैयार नहीं हुए।

धमकियों पर है पुलिस की नजर

भोपाल के पुलिस कमिश्नर संजय कुमार ने बताया कि जो धमकियां मिल रही है उस पर पुलिस की नजर बनी हुई है। साथ ही, धमकी देने वाले की तलाश की जा रही है। मगर कुछ तकनीकी गड़बड़ियों के कारण संबंधित तक पहुंचने में वक्त लग रहा है। भोपाल के विभिन्न शिक्षण संस्थान सहित अन्य स्थानों को बम से उड़ाने की मिल रही। इन धमकियों ने पुलिस की मुश्किलें बढ़ा दी है क्योंकि हर रोज इस तरह की ईमेल के जरिए धमकी आ रही है और पुलिस को कई घंटे तक संबंधित स्थान की तलाशी के लिए अभियान चलाना पड़ रहा है।

भोपाल के केरवा-कलियासोत में 96 अवैध निर्माणों पर चलेगी जेसीबी

सरकार ने माना- 'नो कंस्ट्रक्शन जोन में बने स्कूल और रेस्टोरेंट'

भोपाल (नप्र)। शहर की खूबसूरती और पर्यावरण की जान माने जाने वाले केरवा और कलियासोत जलाशय अब अपने पुराने स्वरूप में लौटेंगे। राज्य सरकार ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के सामने स्वीकार किया है कि इन जलाशयों के आसपास के ग्रीन बेल्ट में बड़े पैमाने पर नियमों की धज्जियां उड़ाई गई हैं। भोपाल विकास योजना 2005 के प्रावधानों को ताक पर रखकर यहां जो निर्माण हुए थे, अब उन्हें हटाने की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। 13 फरवरी 2026 को मंत्रालय में हुई हाई-लेवल मीटिंग के बाद अब जमीन का सीमांकन शुरू हो गया है।

क्या-क्या बना है 'नो-कंस्ट्रक्शन जोन' में- सरकार द्वारा पेश की गई रिपोर्ट के अनुसार, कुल 96 निर्माणों को अवैध पाया गया है। इनमें से 84 सरकारी जमीन पर हैं और 12 निजी जमीन पर, जो 'नो-कंस्ट्रक्शन जोन' के नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं।

अब बनेगा बॉटनिकल गार्डन- सरकार की योजना यहां 150 हेक्टेयर क्षेत्र में एक विशाल बॉटनिकल गार्डन और रीजनल पार्क बनाने की है। इसके लिए टीएंडसीपी विभाग ने मैप तैयार कर लिया है। खसरा रिकॉर्ड को मास्टर प्लान के मैप पर सुपरइम्पोज कर दिया गया है, जिससे अब एक-एक इंच जमीन का हिसाब साफ हो गया है। कलेक्टर भोपाल को निर्देश दिए गए हैं कि वे राजस्व विभाग के जरिए इस पूरी जमीन को जल्द से जल्द बाउंड्री बनाकर सुरक्षित करें।

अब तक क्या हुआ?

13 फरवरी 2026 को मंत्रालय में निर्णायक बैठक हुई। इसके बाद 28 फरवरी 2026 को 69 में से 28 अवैध निर्माणों को प्रशासन ने जमींदोज कर दिया।

एफटीएल के 33 मीटर में बड़ा खतरा

जलाशयों के फुल टैंक लेवल से 33 मीटर के दायरे को सबसे संवेदनशील माना जाता है। केरवा जलाशय के इस दायरे में 16 पक्के निर्माण पाए गए हैं। इनमें से 2 सरकारी जमीन पर हैं, जिन्हें हटाने के आदेश राजस्व कोर्ट ने दे दिए हैं। बाकी 14 निजी जमीन पर हैं, जिन पर अब राजस्व विभाग नियमों के तहत कार्रवाई करने की तैयारी में है। मंत्रालय में हुई बैठक में साफ कर दिया गया है कि भोपाल विकास योजना 2005 के क्लॉज 2.57 का कड़ाई से पालन होगा। 150 हेक्टेयर की यह जमीन केवल प्रकृति के लिए सुरक्षित रहेगी, यहां किसी भी निजी स्वार्थ के लिए कोई जगह नहीं है।

फरियादी ने पकड़ा पैर तो छुड़ाकर भागे एसडीएम

पीड़ित ने कहा- साहब, हमारा घर उजड़ने से बचा लो

सीधी (नप्र)। एमपी के सीधी का वीडियो वायरल हो रहा है। वीडियो में एक व्यक्ति अपनी गुहार लेकर गोपद बनास एसडीएम का पैर पकड़ लिया। यह देखते ही एसडीएम वहां से लौट गए। पीड़ितों का आरोप है कि कॉम्प्लेक्स निर्माण के लिए हमारा घर तोड़ा जा रहा है। हालांकि एसडीएम इससे पल्ला झाड़ रहे हैं। उनका कहना है कि मामला कोर्ट में विचाराधीन है।

दरअसल, शहर के सम्राट पृथ्वी चौक के नजदीक डीजे प्लाजा और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का निर्माण हो रहा है। आरोप है कि इसके लिए पीएम आवास और निजी घरों को गिराया जा रहा है। इसके लिए पीड़ित के घरों के चारों ओर गड्ढे खोद दिया गया है। शिकायत के बाद यहां जनसुनवाई के लिए पहुंचे गोपद बनास एसडीएम के लोगों ने पैर पकड़ लिए। साथ ही उनकी गाड़ी के आगे बैठ गए। इसके बाद एसडीएम वहां से लौट गए।

ये है मामला

सीधी शहर के सम्राट पृथ्वीराज सिंह चौक के समीप पुर्नघनत्वीकरण योजना के तहत डीजे प्लाजा कॉम्प्लेक्स का निर्माण ठेकेदारों द्वारा कराया जा रहा है। कॉम्प्लेक्स निर्माण के पूर्व ही यहां पर कुछ

शासकीय आवास बने हुए थे। वहीं, कुछ में गरीबों को पीएम आवास के तहत लाभान्वित किया गया था, लेकिन जब शॉपिंग काम्प्लेक्स बनने की शुरुआत हुई तो रहवासियों को यहां से हटाकर दूसरी जगहों पर जमीन स्वीकृति की बात प्रशासन ने पूर्व में की थी।

रहवासी जाने को नहीं हुए तैयार- वहीं, यहां रहवासी जाने को तैयार नहीं हुए तो ठेकेदार ने घर के चारों ओर खाईनुमा गड्ढे खोद दिए गए। साथ ही दो-तीन कमरों को ढहा दिया गया। इसके बाद पीड़ित लोगों ने जगह-जगह पर शिकायत की है।मंगलवार को आयोजित होने वाली जनसुनवाई में लोग पूरे परिजन के साथ वहां पहुंच गए। इसके बाद गोपद बनास एसडीएम राकेश शुक्ला वहां पहुंचे।

नहीं गिराया जाएगा घर- इस दौरान पीड़ित ने उनका पैर पकड़ लिया। एसडीएम पैर छुड़वाकर वापस लौटने लगे तो पीड़ित लोग एसडीएम की गाड़ी के आगे बैठ गए। इसके बाद एसडीएम ने कहा कि किसी का घर नहीं गिराया जाएगा।

पीड़ितों को मिला था नोटिस

पीड़ितों को विगत दिनों नोटिस मिला था जो गोपद बनास एसडीएम के हस्ताक्षर से जारी की गई है, जिसमें कहा गया है कि वहां मकान खंडहर हैं। इनको एक हफ्ते में हटा लें। उस लेटर को लेकर जब एसडीएम से सवाल किया गया तो उन्होंने मना कर दिया। वहीं, पीड़ितों ने ठेकेदार के गुर्गों पर धमकी देने और जान से मार देने का आरोप लगाया गया है। राकेश शुक्ला, एसडीएम, गोपद बनास ने कहा पूरा मामला सिविल न्यायालय में विचाराधीन है। बल पूर्वक कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। न्यायालय के आदेश के बाद ही आगे की कार्रवाई होगी। अब देखना दिलचस्प होगा कि पीड़ितों की मदद आखिर शासन- प्रशासन द्वारा किस तरीके से की जाती हैं या फिर ठेकेदार से सांठगांठ कर पीड़ितों का घर चोरी चुपके-तरीके से गिरा दिया जाएगा। मौके पर जिस तरीके से खाईनुमा गड्ढा खोदा गया है। उससे साफ है कि बरसात के दिनों में ये मकान अपने आप ही गिर जाएंगे।

मेट्रीमोनियल साइट पर युवती से दोस्ती के बाद रेप

- पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के मिसरोद इलाके में मेट्रीमोनियल साइट पर दोस्ती कर एक युवक ने रेप किया। आरोपी ने पीड़िता को शादी का भरोसा दिलाया था। पहली बार वारदात को एक होटल रूम में अंजाम दिया गया था।

अब आरोपी शादी करने से मुकर गया है। तब पीड़िता ने थाने पहुंचकर एफआईआर दर्ज करा दी। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस के अनुसार 36 वर्षीय युवती मिसरोद इलाके में रहती है और प्राइवेट नौकरी करती है। पिछले साल अक्टूबर के महीने में मेट्रीमोनियल साइट जीवनसाथी डाट कॉम पर हेमंत कीर नाम के युवक के संपर्क में आई थी। उनके बीच शादी की बात चलने लगी।

पांच महीने पहले संपर्क में आए थे

बातचीत के दौरान युवक ने जल्द ही शादी करने का झांसा दिया। नवंबर 2025 में वह युवती से मुलाकात करने के लिए बुधनी से भोपाल आया और यहां आकर मिसरोद इलाके में रुक गया।

उसने युवती को बातचीत करने के लिए होटल में बुलाया और जल्द ही शादी की बात कहते हुए उसके साथ होटल में शारीरिक संबंध बना लिए।

राज्यपाल ने नागरिकों को गुड़ी पड़वा और भारतीय नव वर्ष पर दी हार्दिक बधाई

नागरिकों से एकता और खुशहाली के लिए स्वयं को समर्पित करने का किया आह्वान

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने प्रदेश के समस्त नागरिकों को 'गुड़ी पड़वा' और 'भारतीय नव वर्ष' के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई एवं आत्मीय शुभकामनाएँ दी हैं। उन्होंने प्रार्थना की है कि शक्ति की उपासना का यह पर्व सभी के जीवन में नई ऊर्जा, सकारात्मकता और उत्तम स्वास्थ्य का संचार करे।

राज्यपाल श्री पटेल ने अपने संदेश में भारतीय कालगणना के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा है कि चैत्र नवरात्रि के साथ प्रारंभ होने वाला हमारा नव वर्ष प्रकृति के नव-श्रृंगार, उमंग और भारत की गौरवशाली परंपरा का जीवंत प्रतीक है। यह पर्व हमारी सांस्कृतिक विरासत को सहेजने और उसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने का अवसर है। राज्यपाल श्री पटेल ने समस्त प्रदेशवासियों का आह्वान किया है कि वे नव वर्ष के इस शुभ अवसर पर प्रदेश की एकता, अखंडता और खुशहाली के लिए स्वयं को समर्पित करने का संकल्प लें।

कार से आए हथियारबंद बदमाशों ने धमकाया, शिकायत के बाद पुलिस ने पकड़ा

मप्र के सीनियर आईपीएस अधिकारी राजा बाबू को है जान का खतरा

भोपाल (नप्र)। अपने नवाचारों को लेकर चर्चा में रहने वाले मध्य प्रदेश पुलिस ट्रेनिंग के एडीजी राजा बाबू को अपनी जान का खतरा सता रहा है। उन्होंने पुलिस मुख्यालय को पत्र लिखकर सुरक्षा की मांग की है। एडीजी राजा बाबू ने पुलिस मुख्यालय को पत्र लिखते हुए आरोप लगाए हैं कि उन्हें पुलिस प्रशिक्षण व्यवस्था में किए गए नवाचार के चलते उन्हें निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने आशंका जताई कि शंका है कि ट्रेनिंग सेंटर में नवाचारों के कारण कुछ लोग नाराज है। कार से आए हथियारबंद बदमाशों ने धमकाया था। शिकायत के बाद पुलिस ने आरोपियों को पकड़ लिया है।

बंगले के बाहर की गाली गलौज- यह घटनाक्रम उस समय सामने आया है, जब मंगलवार सुबह अज्ञात लोगों ने एडीजी राजा बाबू के बंगले के बाहर गाली गलौज और अमर्यादित व्यवहार किया। इसके कारण बंगले की सुरक्षा बढ़ाने की मांग की गई है।

डंडा लहराते नजर आए- बताया जाता है कि एडीजी के बंगले के बाहर कुछ अज्ञात लोग डंडा लहराते हुए नजर आए थे। मंगलवार सुबह की घटना के सीसीटीवी में एक अज्ञात युवक को डंडा लेकर घूमते और ड्यूटी में तैनात कर्मचारियों के साथ गाली गलौच करते देखा गया। इस संबंध में एजीडी की तरफ से भोपाल पुलिस कमिश्नर को शिकायत दी गई।

सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जांच शुरू- अभी तक पुलिस अज्ञात लोगों की जानकारी नहीं जुटा पाई है। हालांकि, सीसीटीवी फुटेज के आधार पर अज्ञात युवकों की तलाश की जा रही है। भोपाल में एडीजी राजा बाबू का घर त्रिलंगा इलाके में है। यह शाहपुरा थाना क्षेत्र में

आता है। घटना के बाद उन्होंने शाहपुरा थाने में शिकायत दी है।

अयोध्या में कारसेवक रहे हैं राजा बाबू- एडीजी राजा बाबू सिंह उनमें से एक हैं, जिन्होंने छात्र जीवन में साल 1992 में अयोध्या में कारसेवक की भूमिका निभाई थी। फिलहाल, 11 जुलाई 1967 को उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में जन्मे राजा बाबू मध्य प्रदेश कैडर के 1994 बैच के आईपीएस अधिकारी हैं। वे साल 1993 में यूपीएससी सिविल सर्विसेज परीक्षा में पास हुए और अगले साल 6 सितंबर 1994 को उनकी नियुक्ति हुई।

राजस्थान के प्रशिक्षुओं को किया बाहर- हाल में राजा बाबू ने ग्वालियर के तिघरा स्थित पुलिस ट्रेनिंग सेंटर से राजस्थान पुलिस के जवानों को बाहर किया था। वे लगातार ट्रेनिंग सेंटर में खाने का दुष्प्रचार एआई वीडियो के जरिए कर रहे थे। राजा बाबू केंद्रीय प्रतिनियुक्ति के दौरान भी अहम पदों पर रहे हैं।

संपादकीय

अपने गिरेबां में झांके अमेरिका

अमेरिका के अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (यूएससीआईआरएफ) की रिपोर्ट को भारत सरकार ने पक्षपाती बताते हुए, इसे सिरे से खारिज कर दिया है। यूएससीआईआरएफ एक अर्द्ध सरकारी संस्था है, जो दुनिया भर के देशों में अल्पसंख्यकों की धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति को लेकर रिपोर्ट जारी करती है। उसकी ताजा रिपोर्ट में इस बार भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ (रिसर्च एंड एनालिसिस विंग) और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई है। यूएससीआईआरएफ ने अपनी रिपोर्ट में अमेरिकी विदेश मंत्रालय से भारत को विशेष चिंता वाले देश (सीपीसी) के रूप में नामित करने की मांग की है। रिपोर्ट के अनुसार भारत में धार्मिक स्वतंत्रता की स्थिति निरंतर खराब हो रही है। यूएससीआईआरएफ ने रॉ और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर धार्मिक स्वतंत्रता उल्लंघन के गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि अमेरिका को दोनों संगठनों पर लक्षित प्रतिबंध लगाने चाहिए। अपनी सिफ़ारिशों में यूएससीआईआरएफ ने कहा कि रॉ और आरएसएस से जुड़े लोगों और संस्थानों की संपत्तियां फ्रीज़ की जाएं और उनके अमेरिका में प्रवेश पर रोक लगाई जाए। साथ ही अमेरिका भारत को दी जाने वाली सुरक्षा सहायता और द्विपक्षीय कारोबार को धार्मिक स्वतंत्रता में सुधारों से जोड़े और हथियार निर्यात नियंत्रण अधिनियम के तहत भारत को हथियारों की बिक्री पर रोक भी लगाए। हालांकि इन सिफ़ारिशों को अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने स्वीकार नहीं किया है। दरअसल यूएससीआईआरएफ (यूनाइटेड स्टेट्स कमिशन ऑन इंटरनेशनल रिलिजियस फ्रीडम) एक स्वतंत्र आयोग और सरकारी एजेंसी है जिसमें अमेरिका की दोनों बड़े राजनीतिक दलों रिपब्लिकन और डेमोक्रेटिक पार्टी के लोग शामिल हैं। इस आयोग की स्थापना साल 1998 में अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत की गई थी। यह संघीय सरकारी एजेंसी अमेरिका के विदेश मंत्रालय से अलग है और स्वतंत्र रूप से काम करती है। यूएससीआईआरएफ हर साल अपनी वार्षिक धार्मिक स्वतंत्रता रिपोर्ट तैयार करती है और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर धार्मिक स्वतंत्रता बढ़ाने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति, विदेश मंत्रालय और कांग्रेस को नीतिगत सिफ़ारिशें देता है। यह आयोग उन देशों की पहचान करता है, जहां धार्मिक स्वतंत्रता का निरंतर, गंभीर और व्यवस्थित उल्लंघन होता है। आयोग की सिफ़ारिशों पर अमेरिका का विदेश मंत्रालय ऐसे देशों को विशेष चिंता वाले देश (सीपीसी) और विशेष निगरानी सूची (एसडब्ल्यूएल) में वर्गीकृत करता है। इस रिपोर्ट में भारत के अलावा म्यांमार, क्यूबा, चीन, इरीट्रिया, ईरान, निकारागुआ, नाइजीरिया, उत्तर कोरिया, पाकिस्तान, रूस, सऊदी अरब, ताजिकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान को फिर से सीपीसी में शामिल करने की सिफ़ारिश की गई है। इस बार यूएससीआईआरएफ ने भारत, अफ़गानिस्तान, लीबिया, सीरिया और वियतनाम को भी इस सूची में शामिल करने की मांग की है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में हिंदुत्ववादी समूह कानून के डर के बिना ईसाइयों और मुसलमानों पर हमले कर रहे हैं। इस पर भारत सरकार के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा है कि अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग की रिपोर्ट स्पष्ट रूप से पक्षपाती और प्रेरित है। उधर आरएसएस ने इस रिपोर्ट के बारे में कोई आधिकारिक प्रतिक्रिया नहीं दी है। ऐसा नहीं है कि इस रिपोर्ट में भारत के बारे में जो बातें कही गई हैं, वह पूरी तरह गलत हैं। लेकिन सवाल यह है कि भारत के आंतरिक मामलों में दखलंदाजी का यह अधिकार अमेरिका को दिया किसने? खुद अमेरिका के भीतर अल्पसंख्यकों और खासकर अश्वेत तथा एशियाई समुदायों की हालत क्या है, यह बात किसी से छिपी नहीं है। अलबत्ता भारत में विपक्षी कांग्रेस को जरूर इस रिपोर्ट के बहाने आरएसएस पर हमला करने का मौका मिल गया है। भारत सरकार को चाहिए कि रिपोर्ट को खारिज करने के साथ साथ इसको लेकर अमेरिका से अपना कड़ा प्रतिरोध भी दर्ज कराए और कहे कि पहले अमेरिका अपने गिरेबां में झांके।

मरीजों की जान का जिम्मेदार कौन?

नजरिया

नृपेन्द्र अभिषेक नृप

लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।

दरअसल अस्पतालों में आग की घटनाएँ अब अपवाद नहीं रहीं, बल्कि एक चिंताजनक प्रवृत्ति बनती जा रही हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में बार-बार होने वाली ऐसी घटनाएँ यह दर्शाती हैं कि सुरक्षा मानकों के पालन में गंभीर कमियाँ हैं। कई बार अस्पतालों के प्रशासक अस्पताल के विस्तार और अधिक मरीजों को भर्ती करने पर तो ध्यान देते हैं, लेकिन सुरक्षा के बुनियादी ढाँचे को मजबूत बनाने पर उतना ध्यान नहीं देते। निजी स्वास्थ्य सेवाओं के प्रतिस्पर्धी माहौल में कुछ संस्थान खर्च बचाने के लिए सुरक्षा उपकरणों के रखरखाव को टाल देते हैं। दूसरी ओर छोटे शहरों और कस्बों में कई अस्पताल ऐसे भी होते हैं जो बिना वैध लाइसेंस या सुरक्षा प्रमाणपत्र के ही संचालित होते रहते हैं। कई बार अग्निशमन सुरक्षा प्रमाणपत्र की अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी अस्पताल चलते रहते हैं और प्रशासन की ओर से उन पर कठोर कार्रवाई नहीं की जाती।

अस्पतालों को सामान्यतः उपचार और आशा के पवित्र स्थान के रूप में देखा जाता है। यह वे स्थान होते हैं जहाँ लोग अपने जीवन की रक्षा और स्वास्थ्य लाभ की उम्मीद के साथ डॉक्टरों, नर्सों और आधुनिक चिकित्सा व्यवस्था पर भरोसा करते हैं। चाहे अस्पताल सरकारी हो या निजी, बीमार और असहाय मरीजों के लिए वे अंतिम आश्रय बन जाते हैं। लेकिन जब यही अस्पताल लापरवाही और असावधानी के कारण आग जैसी दुर्घटनाओं का शिकार बन जाते हैं और मरीजों की जान चली जाती है, तब एक गंभीर नैतिक और प्रशासनिक प्रश्न सामने आता है कि आखिर इसकी जिम्मेदारी किसकी है? पिछले कुछ वर्षों में भारत के कई शहरों- दिल्ली, कोलकाता, झांसी, अहमदाबाद, जयपुर और ओडिशा के कटक में अस्पतालों में आग लगने की घटनाओं ने यह स्पष्ट कर दिया है कि स्वास्थ्य संस्थानों में सुरक्षा मानकों के पालन को लेकर गंभीर कमियाँ मौजूद हैं। इन घटनाओं में अनेक निर्दोष लोगों की जान गई और यह भी सामने आया कि आग से सुरक्षा के नियम कई बार केवल कागज़ों तक ही सीमित रह जाते हैं।

अस्पताल एक अत्यंत जटिल वातावरण होते हैं। यहाँ ऑक्सीजन सिलेंडर, अनेक प्रकार के विद्युत उपकरण, ज्वलनशील रसायन और लगातार चलने वाली बिजली की व्यवस्था होती है। विशेष रूप से गहन चिकित्सा कक्ष यानी आईसीयू जैसे स्थान अत्यंत संवेदनशील होते हैं, जहाँ गंभीर रूप से बीमार मरीज जीवन रक्षक उपकरणों पर निर्भर रहते हैं और किसी भी आपात स्थिति में तुरंत बाहर निकल पाना उनके लिए संभव नहीं होता। इसलिए अस्पतालों में आग से सुरक्षा के कठोर मानकों का पालन करना बेहद जरूरी है। इसमें अग्नि अलार्म, स्प्रिंकलर, अग्निशामक यंत्र और स्पष्ट रूप से चिह्नित आपातकालीन निकास द्वार जैसी व्यवस्थाएँ शामिल होती हैं। लेकिन कई दुर्घटनाओं की जाँच में यह सामने आया है कि ये व्यवस्थाएँ केवल औपचारिकता बनकर रह जाती हैं। कहीं अग्निशामक यंत्र काम नहीं करते, कहीं आपातकालीन रास्ते अवरुद्ध होते हैं, तो कहीं विद्युत तारें पुरानी और असुरक्षित होती हैं। ऐसी लापरवाही अस्पतालों को सुरक्षा के स्थान के बजाय संभावित खतरे के केंद्र में बदल देती है।

ओडिशा के कटक स्थित एक सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में हुई आग की घटना इसी प्रकार की लापरवाही का उदाहरण है। खबरों के अनुसार देर रात अस्पताल के एक संवेदनशील उपचार क्षेत्र में अचानक आग लग गई, जिससे वहाँ अफरा-तफरी मच गई। पहले से गंभीर बीमारी से जूझ रहे मरीज अचानक ऐसी आपदा में फँस गए जिसके लिए अस्पताल की व्यवस्था पूरी तरह तैयार नहीं थी। इस घटना में कई मरीजों की जान चली गई और कई स्वास्थ्यकर्मी बचाव कार्य के दौरान घायल हो गए। इस घटना को और चिंताजनक इसलिए बनाता है कि कुछ ही समय पहले राज्य सरकार ने सभी चिकित्सा संस्थानों को आग से सुरक्षा के उपाय सुनिश्चित करने के निर्देश दिए थे। ऐसे में यह सवाल उठता है कि क्या उन निर्देशों का सही ढंग से पालन नहीं हुआ या उनकी निगरानी में कमी रह गई।

दरअसल अस्पतालों में आग की घटनाएँ अब अपवाद नहीं रहीं, बल्कि एक चिंताजनक प्रवृत्ति बनती जा रही हैं। देश के विभिन्न हिस्सों में बार-बार होने वाली ऐसी घटनाएँ यह दर्शाती हैं कि सुरक्षा मानकों के पालन में गंभीर कमियाँ हैं। कई बार अस्पतालों के प्रशासक अस्पताल के विस्तार और अधिक मरीजों को भर्ती करने पर तो ध्यान देते हैं, लेकिन सुरक्षा के बुनियादी ढाँचे को मजबूत बनाने पर उतना ध्यान नहीं देते। निजी स्वास्थ्य सेवाओं के प्रतिस्पर्धी माहौल में कुछ संस्थान खर्च बचाने के लिए सुरक्षा उपकरणों के रखरखाव को टाल देते हैं। दूसरी ओर छोटे शहरों और कस्बों में कई अस्पताल ऐसे भी होते हैं जो बिना वैध लाइसेंस या सुरक्षा प्रमाणपत्र के ही संचालित होते रहते हैं। कई बार अग्निशमन सुरक्षा प्रमाणपत्र की अवधि समाप्त हो जाने के बाद भी अस्पताल चलते रहते हैं और प्रशासन की ओर से उन पर कठोर कार्रवाई नहीं की जाती।

इसलिए जवाबदेही का प्रश्न केवल अस्पताल प्रबंधन तक सीमित नहीं है। इसमें सरकारी नियामक संस्थाएँ, नगर प्रशासन और अग्निशमन विभाग भी समान रूप से जिम्मेदार होते हैं। कानून के अनुसार अस्पतालों में समय-समय पर अग्नि सुरक्षा निरीक्षण होना चाहिए, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि अस्पताल में आपातकालीन निकास मार्ग, सुरक्षित विद्युत व्यवस्था और कार्यरत अग्नि अलार्म मौजूद हों। लेकिन इन नियमों की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि उनका पालन कितनी ईमानदारी और कठोरता से कराया जाता है। यदि निरीक्षण केवल कागज़ों पर किए जाएँ या अधिकारियों की लापरवाही के कारण उल्लंघनों को नजरअंदाज कर दिया जाए, तो ऐसे नियमों का कोई अर्थ नहीं रह जाता।

अस्पतालों की सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू आपातकालीन परिस्थितियों के लिए तैयार रहना भी है। कई बार बुनियादी सुविधाएँ होने के बावजूद कर्मचारियों को आपदा से निपटने का पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं दिया जाता। डॉक्टरों, नर्सों और अन्य कर्मचारियों को आग लगने जैसी परिस्थितियों में तुरंत कार्रवाई करने, मरीजों को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने और आग पर नियंत्रण पाने के तरीकों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इसके लिए नियमित रूप से सुरक्षा अभ्यास और मॉक ड्रिल आयोजित करना आवश्यक है। दुर्भाग्य से कई अस्पतालों में ऐसी ड्रिल शायद ही कभी होती हैं, जिसके कारण दुर्घटना के समय भ्रम और घबराहट की स्थिति पैदा हो जाती है।

इन घटनाओं में सबसे अधिक असहाय स्थिति मरीजों की होती है। कई मरीज वृद्ध या गंभीर रूप से बीमार होते हैं और जीवन रक्षक उपकरणों पर निर्भर रहते हैं। उनके परिवारजन पूरे विश्वास के साथ उन्हें अस्पताल में भर्ती कराते हैं कि यहाँ उनकी सुरक्षा सुनिश्चित होगी। लेकिन जब लापरवाही के कारण वही अस्पताल उनके लिए खतरे का स्थान बन जाता है, तो यह केवल एक दुर्घटना नहीं बल्कि स्वास्थ्य व्यवस्था की नैतिक विफलता भी होती है। चिकित्सा का मूल उद्देश्य केवल उपचार देना ही नहीं बल्कि मरीजों की समग्र सुरक्षा सुनिश्चित करना भी है। आज के समय में स्वास्थ्य सेवाओं के बढ़ते व्यवसायीकरण ने भी इस समस्या को जटिल बना दिया है। कई बार आर्थिक लाभ और विस्तार की होड़ में सुरक्षा के मूलभूत मानकों को पर्याप्त महत्व नहीं दिया जाता। अस्पताल आधुनिक तकनीक और सुविधाएँ तो स्थापित करते हैं, लेकिन बुनियादी सुरक्षा व्यवस्थाओं की अनदेखी हो जाती है। यह स्थिति बताती है कि स्वास्थ्य क्षेत्र में ऐसी सशक्त प्रशासनिक व्यवस्था की आवश्यकता है जो मरीजों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दे। इसके समाधान के लिए कुछ ठोस कदम उठाने आवश्यक हैं। अस्पतालों में नियमित अग्नि सुरक्षा ऑडिट होना चाहिए और सुरक्षा नियमों का पालन न करने वाले संस्थानों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए। आधुनिक तकनीक आधारित अग्नि सुरक्षा प्रणाली और सुरक्षित विद्युत व्यवस्था को अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। साथ ही अस्पताल कर्मचारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण और आपदा प्रबंधन अभ्यास भी जरूरी हैं। सुरक्षा निरीक्षण से संबंधित रिपोर्ट सार्वजनिक की जानी चाहिए ताकि मरीज और उनके परिवार बेहतर निर्णय ले सकें।

अभी भी नीतियों और उनके क्रियान्वयन के बीच बड़ा अंतर मौजूद है। जब उपचार के प्रतीक अस्पताल ही त्रासदी के स्थल बन जाते हैं, तब समाज को गंभीर आत्ममंथन करने की आवश्यकता होती है। जवाबदेही केवल दुर्घटना के बाद जांच तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि दुर्घटना से पहले ही सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यदि अस्पतालों को सचमुच सुरक्षित स्थान बनाना है, तो प्रशासन, चिकित्सा संस्थानों और समाज, सभी को मिलकर यह सुनिश्चित करना होगा कि मरीजों की सुरक्षा किसी भी परिस्थिति में उपेक्षित न हो। तभी स्वास्थ्य संस्थानों पर लोगों का विश्वास मजबूत बना रह सकेगा।

एआई के जमाने में वर्ष प्रतिपदा की प्रासंगिकता

नव वर्ष

गिरीश जोशी

लेखक संस्कृति अध्येता हैं।

आज पूरी दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की चर्चा चल रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पूरी दुनिया के स्वरूप को बदलने जा रहा है। आज बड़ी से बड़ी और छोटी से छोटी गणना करना बड़ा आसान हो गया है। हम दिन - रात, सप्ताह, माह, वर्ष यहां तक की युगों की गणना के बारे में भी हमारे शास्त्रों के माध्यम से जानते हैं।

शास्त्रों में समय की सबसे बड़ी इकाई 'कल्प' को माना गया। एक कल्प में 432 करोड़ वर्ष होते हैं। एक हजार महायुगों का एक कल्प माना गया। इस समय श्वेतवाराह 'कल्प' चल रहा है. इस कल्प का वर्तमान में सातवां मन्वन्तर है, जिसका नाम वैवस्वत है। वैवस्वत मन्वन्तर के 71 महायुगों में से 27 बीत चुके हैं तथा 28 वीं चतुर्युगी के भी सतयुग, त्रेता तथा द्वापर बीत कर कलियुग का 5123वां वर्ष इस वर्ष प्रतिपदा से प्रारंभ होगा। इसका अर्थ है कि श्वेतवाराह कल्प में 1,97,29,49,122 वर्ष बीत चुके हैं। यानि सृष्टि का प्रारम्भ हुए 2 अरब वर्ष हो गये हैं। आज के वैज्ञानिक भी पृथ्वी की आयु 2 अरब वर्ष ही बताते हैं।

सबसे बड़ी इकाई की गणना के साथ-साथ प्राचीन भारत के वैज्ञानिक ऋषियों ने समय की सबसे छोटी इकाई 'त्रुटि' का भी आविष्कार किया था। 'त्रुटि' का मान एक सैकण्ड का 33,750 वां भाग है। इससे यह बात समझ में आती है कि उसे समय भी कोई पद्धति मौजूद थी जो आज हमारी जानकारी से दूर है। इसलिए हमें आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक चमत्कृत भी करती है और कुछ हद तक लोगों को डराती भी है। डरने के बड़े कारणों में से एक हमारे युवा वर्ग की नौकरी पर मँडराता संभावित खतरा और दूसरा कारण इस तकनीक का अपने आप को विकसित करना जिससे यह आशंका है कि कहीं यह मानवीय क्षमता, योग्यताओं पर हावी ना हो जाए।आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के खोजकर्ता जेफरी हिन्टन जिन्हें न्यूरल नेटवर्क बनाने के लिए 2024 का नोबेल पुरस्कार मिला ने एक पत्रकार को साक्षात्कार देते समय कहा था कि आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एक ट्रिलियन न्यूरल नेटवर्क के साथ काम कर रहा है, जबकि मानवीय मस्तिष्क में सौ ट्रिलियन न्यूरल नेटवर्क होते हैं। लेकिन उसके बावजूद आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की क्षमता मानव की क्षमता से कई गुना अधिक है। ऐसे में यह सवाल उठना लाजिमी है कि जब इसकी क्षमता आदमी के दिमागी क्षमता की बराबरी कर लेगी तब क्या होगा। मैट शुमर पिछले छह वर्षों से एआई के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। उन्होंने कई सफल एआई उत्पाद बनाए हैं। हाल ही में उन्होंने 'समथिंग बिग इन हैपनिंग' (कुछ बहुत बड़ा हो रहा हैज) शीर्षक से एक लेख लिखा, जिसे केवल चौबीस घंटों में चार करोड़ से अधिक लोगों ने पढ़ा। उस लेख में कुछ महत्वपूर्ण बातें उन्होने लिखी है -कुछ महीने पहले तक मुझे एआई को बार-बार निर्देश देने पड़ते थे और उसकी गलतियाँ सुधारनी पड़ती थीं, लेकिन अब ऐसा नहीं है। मैं सिर्फ काम का स्वरूप बता देता हूँ, चार घंटे के लिए कंप्यूटर से दूर चला जाता हूँ, और जब वापस आता हूँ तो काम 100 प्रतिशत पूरा होता है। अब एआई के पास केवल जानकारी ही नहीं, बल्कि 'निर्णय-क्षमता' और 'रुचि-समझ' भी विकसित हो गई है।यह सब इतनी तेजी से क्यों हो रहा है? क्योंकि अब एआई स्वयं को विकसित करने में भी मदद कर रहा है। जीपीटी-5.3 कोडेक्स ऐसा पहला मॉडल है जिसने अपने ही विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जैसे-जैसे यह फीडबैक लूप चलता जा रहा है, प्रगति की गति और तेज होती जा रही है। शोधकर्ता इसे इंटेलिजेंस एक्सप्लोजन यानी बुद्धिमत्ता का विस्फोट कह रहे हैं। अनुमान है कि 2027 तक हमारे पास ऐसी प्रणालियाँ होंगी जो लगभग हर काम में मनुष्य से अधिक सक्षम होंगी।शास्त्रों में एक वर्णन है कि हर युग में कौन सी शक्ति से हम दुनिया में शांति, स्थिरता और उत्कर्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। शास्त्र कहते है- त्रेतायां मंत्र-शक्ति, ज्ञानशक्तिः कृते-युगे। द्वापरे युद्ध-शक्तिश्च, संघशक्ति कलौ युगे।हमारे आख्यानों में प्रतीकों और प्रसंग के माध्यम से हर युग में उभरने वाली शक्ति का संकेत किया गया है। आज जिस तरह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस स्वयं को बनाने की स्थिति में आता दिखाई देता है इस प्रकार की शक्ति रक्तबीज नामक असुर के माध्यम से हमें पूर्व से ही बताई जा चुकी है। रक्तबीज का संहार करने के लिए माँ काली अपने हाथ में खप्पर का उपयोग कर रक्तबीज के एक बूंद रक्त को भी धरती पर न गिरने देने के आख्यान से हमें इस प्रकार स्वयं को बनाने वाली शक्ति पर नियंत्रण पाने का रहस्य समझाया गया है। खप्पर एक पात्र है, पात्र से ही पात्रता शब्द आता है। यानि हमे अपनी पात्रता इस प्रकार से बढ़ानी पड़ेगी ताकि हम इंटेलिजेंस एक्सप्लोजन यानी बुद्धिमत्ता के विस्फोट को इसमे समेट सके। इस दौर अपनी पात्रता बढ़ाने के लिए बक़ौल मैट शुमर कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखना जरूरी है - मानवीय कौशल पर निवेश करें - एआई तर्क और डेटा को संभाल सकता है, लेकिन सहानुभूति, बातचीत/समझौता कौशल और नेतृत्व अब भी मानवीय क्षेत्र के विषय हैं और भविष्य में भी रहेंगे। इसलिए पब्लिक स्पीकिंग, लेखन और लोगों से संपर्क - संबंध बनाने जैसे नेतृत्व के कौशल सीखें, क्योंकि इन्हें एआई आसानी से प्रतिस्थापित नहीं कर पाएगा। स्वास्थ्य और मानसिक शक्ति का ध्यान रखें- एआई क्रांति केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह एक भावनात्मक उतार-चढ़ाव भी लेकर आती है। बढ़ती अनिश्चितता तनाव पैदा कर सकती है। इसलिए अपने स्वास्थ्य, ध्यान और अच्छे साहित्य के अध्ययन को प्राथमिकता दें। आपकी मानसिक स्थिरता ही आपकी सबसे बड़ी ताकत होगी।

एक बात गौरतलब है कि एआई जागरूकता के उच्चतम स्तर को तो छू सकता है लेकिन चेतना के स्तर को कभी छू नही सकता और इसलिए हम हमेशा एआई से एक कदम आगे रहेंगे। मानव के भीतर ईश्वरीय चेतना मौजूद है। सनातन धर्म में इसी ईश्वरीय चेतना से जुडने के लिए अनेक प्रविधियाँ बताई गई है।यदि हम काल के चक्र की स्थिति, गति और पद्धति समझ लेते हैं तो प्रत्येक काल में विजयी हो सकते हैं। लेकिन उसके लिए जरूरी है कि हम प्रकृति के साथ कालानुकूल समन्वय बनाकर चलें। पूरी दुनिया की मानवता को इस दिशा में सोचना होगा आपसीसंघर्ष, वैमनस्य, ईर्ष्या, द्वेष, एक दूसरे के संसाधनों पर कब्जा जमाने की वृत्ति, सबको अपनी सोच और अपनी पद्धति से चलने का दुराग्रह को छोड़कर ऊंच- नीच के भाव को मिटा कर सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत के विश्व धर्म को अपनाना होगा।

आज के दौर में ये काम संगठित सामूहिक चेतना से जो चरित्रवान, गुणसंपन्न, अनुशासित, धर्म,समाज, राष्ट्र के लिए समर्पित व्यक्तियों के संगठन से उत्पन्न होने वाली शक्ति से होगा।

वर्ष प्रतिपदा पर ध्वज फहराया जाता है, महाराष्ट्र में इसे गुड़ी के रूप में लगाया जाता है, गुड़ी पर भी एक तांबे का पात्र चमकाकर उल्टा करके लगाया जाता है जो इस बात का संकेत करता है कि हमें अपने शरीर रूपी पात्र को शारीरिक गतिविधियों से चमकाना पड़ेगा, पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों, शंका - कुशंकाओं से खाली करना पड़ेगा और भगवा ध्वज द्वारा दर्शित गुणों जैसे उद्यम,साहस, धैर्य, बुद्धि,शक्ति, पराक्रम आदि को दैनिक अभ्यास से विकसित कर आत्मसात करना होगा। वर्ष प्रतिपदा पर फहराया जाने वाला भगवा ध्वज इस बात का संकेत भी करता है कि एक दिन सनातन विश्व धर्म की पताका पूरे दुनिया में लहराएगी और संपूर्ण मानवता का कल्याण होगा।

संवत् प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य

वर्ष प्रतिपदा

अरविंद श्रीधर

निदेशक, माधवराव सप्रे स्मृति समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान,भोपाल)

आद्वितीय महानायक सम्राट विक्रमादित्य और उनके द्वारा प्रवर्तित विक्रम संवत् लंबे समय से इतिहासकारों एवं शोधकर्ताओं के बीच गवेषणा का विषय रहा है। इतिहासकार इस बात पर तो सहमत हैं कि 'विक्रमादित्य' नामधारी सम्राट द्वारा विक्रम संवत् प्रारंभ किया गया था,लेकिन इसके साथ यह भी जोड़ देते हैं कि 'विक्रमादित्य' दरअसल एक उपाधि रही है, जिसे समय-समय पर अनेक राजाओं ने धारण किया था। अब कौन से राजा ने सबसे पहले विक्रमादित्य काविरुद धारण किया था, और कौनसा विक्रमादित्य विक्रम संवत् का प्रवर्तक है,यह विषय लंबे समय तक बहस-मुबाहिसों का हिस्सा बना रहा है। बहुत कुछ धुंध छंट चुकी है,फिर भी विक्रम संवत् प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता पर कुछ विद्वान प्रश्नचिन्ह लगाते रहते हैं।

इतिहासकारों के मतमतांतर और तर्क-वितर्क कुछ भी धारणाएं स्थापित करते रहें,लोक में विक्रमादित्य से संबंधित आख्यानों की पैठ और सामाजिक-धार्मिक अनुष्ठानों में विक्रम संवत् की स्वीकार्यता विक्रमादित्य के समय से लेकर अब तक निर्बाध बनी हुई है। यह सातत्य सम्राट विक्रमादित्य और उनके द्वारा प्रवर्तित विक्रम संवत् की ऐतिहासिकता कासबसे पुख्ता प्रमाण है। विक्रमादित्य की ऐतिहासिकता को लेकर जिस एक तथ्य पर अधिकांश इतिहासकार सहमत हैं, उसके अनुसार- ई.पू. पहली शताब्दी में उज्जयिनी के सिहांसन पर गर्दभिल्ल नामक राजा राज करता था। साहित्यिक ग्रन्थों एवं लोक कथाओं में गर्दभिल्ल के महेन्द्रादित्य,गंदर्भसेन आदि नामों का भी उल्लेख मिलता है।

शकों ने गर्दभिल्ल को पराजित कर उज्जयिनी पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया,लेकिन शक अधिक समय तक राज्य पर काबिज न रह सके। ईशा पूर्व 57 में गर्दभिल्ल के पुत्र विक्रमादित्य ने शकों को खदेड़कर उज्जयिनी पर पुनः अधिकार कर लिया। आक्रांता शकों पर इस विजय के उपलक्ष्य में विक्रमादित्य ने 'शकारि' की उपाधि धारण की और एक संवत् प्रारंभ किया जो 'विक्रम संवत्' के नाम से प्रचलित हुआ। विक्रमादित्य शूरवीर तो था ही,उसकी ख्याति 'पित्रहीनों के पिता, बधुंहीनों के बंधु,अनाथों के नाथ एवं प्रजाजनों के सर्वस्व' के रूप में दिग-दिगंत में व्याप्त थी। अपने जीवनकाल में ही विक्रमादित्य का नाम एक आदर्श राजा का पर्याय बन चुका था। कालांतर में 'विक्रमादित्य' नाम एक विरुद के रूप में प्रतिष्ठित हुआ,जिसे परिवर्ती काल के अनेक राजाओं ने धारण किया। साहित्यिक कृतियों एवं लोक कथाओं में विक्रमादित्य को ज्ञान, साहस,पराक्रम और न्यायप्रियता की प्रतिमूर्ति बताते हुए उसकी तुलना प्रत्यक्ष देव सूर्य नारायण से की गई है। यह उक्ति प्रसिद्ध है- ऊपर तो सूरज तपे,नीचे विकरमजीत। धन धरती धन मालवो,धन राजा की रीत।।

विक्रमादित्य को लेकर प्रचलित लोक कथाओं का फलक अत्यंत व्यापक है। केवल मालवी में ही नहीं,बुंदेली लोक कथाओं में भी विक्रमादित्य एक लोकप्रिय महानायक के रूप में उपस्थित हैं। लोक कथाओं में विक्रमादित्य की प्रजावत्शलता और न्यायप्रियता का उल्लेख विशेष रूप से पाया जाता है। कुछ लोक कथाएं ऐसी भी प्रचलित हैं, जिनमें विक्रमादित्य को पशु-पक्षियों से उनकी ही बोली में बात करते हुए बताया गया है। विक्रमादित्य के बारे में प्रसिद्ध है कि उसने काठ की तलवार से ही पृथ्वी जीत ली थी। इस किंवदंती का तात्पर्य यह है कि विक्रमादित्य की प्रबल धाक के चलते समस्त राजाओं ने बिना प्रतिरोध किए ही उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी। विक्रम के सिक्कों से उसके द्वारा किए गए अश्वमेध यज्ञ और चक्रवर्ती सम्राट होने की पुष्टि होती है।

भारतीय इतिहास में ऐसे अनेक राजाओं के नाम दर्ज हैं, जिन्होंने राज्य विस्तार से लेकर शासन व्यवस्था के सुचारू संचालन तक के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कीं ; लेकिन उन सबके बीच में विक्रमादित्य का नाम एक अद्वितीय सम्राट के रूप में अलग ही नजर आता है।

विक्रमादित्य को जो प्रतिष्ठा अपने राज्यकाल के दौरान प्राप्त थी,वह परिवर्ती काल में भी उनके साथ जुड़ी रही। काल के प्रवाह के साथ उनकी यशगाथाओं के स्वर मद्धम नहीं पड़े हैं। विक्रमादित्य के परिवर्ती शासक यदि अपने नाम के साथ विक्रमादित्य विरुद जोड़कर गौरव का अनुभव करते रहे हैं,तो आज राजत्व के आदर्श, विदेशी आक्रांताओं से भारत भूमि को मुक्ति दिलाने वाले महान देशभक्त और सनातन संस्कृति के प्रतीक पुरुष के रूप में विक्रमादित्य का नाम भारतीय जनमानस में रचा-बसा

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

रंगीले व हठीले के वैश्विक चिंतन के बीच आपदा में अवसर

व्यंग्य

सुरेश उपाध्याय

(लेखक व्यंग्यकार है)

शिक्षा पूर्ण होने को है, आगे क्या प्लान है।' हठीले को शुभचिंतक रंगीले ने पूछा!

सबसे पहले खून की जांच करवाऊंगा, हठीले ने धीमे से कहा।

खून की जांच क्यो?

खून में व्यापार है या नौकरी यह जानने के लिए!

अरे, खून की जांच में यह पता नही चलता है, यह तो एक मुहावरा है.

तो क्या, आपदा में अवसर भी कोई मुहावरा है.

नहीं, यह परिस्थिति का फायदा उठाने की मंशा / सलाह हैं

मैं समझा नहीं

आपदा प्राकृतिक कारणो यथा आग, बाढ, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, ओलावृष्टि, भूकम्प, ज्वालामुखी, भूस्खलन, हिमस्खलन, महामारी आदि से या बांध/तालाब फूटने, पूल ढहने, रेल - बस एक्सीडेंट, हेलीकोप्टर / प्लेन क्रेश आदि कारणो से आ सकती है. इन सबमें निर्माण, पुनर्निर्माण, विस्थापन, चिकित्सा सहायता, बीमा क्लेम, मुआवजा आदि कई तरह के अवसर प्राप्त होते हैं. सिस्टम के लोग इनको बेहतर समझते हैं और इस अवसर के समय अपनी उपयुक्त नियुक्ति/प्रतिनियुक्ति के प्रयास करते हैं. संकट के समय लोगो की सहायता कर पुण्य कमाने का अवसर उन्हे मिलता है. जनसेवा के लाभ के अवसर से वंचितो के लिए यह ईर्ष्या का बायस होता है. ऐसे जलकुकड़े इसे उत्सव तथा उत्सवी बोनस की संज्ञा से नवाजते है.

क्या युद्ध भी कोई आपदा है?

युद्ध एक बड़ी आपदा है, इसीलिए बड़ी ताकते स्वयम लड़ने के बजाए पड़ोसी व प्रतिद्वंदी देशों को लड़ाने में विश्वास करती है. कभी-कभी उनके गणित बिगड़ जाते हैं और उनके लिए भी बड़ी आपदा बन जाते हैं. ऐसी स्थिति में बचने के लिए वे गली ढूंढते रहते हैं तथा हार में भी जीत का दावा / दिखावा करते हैं. युद्ध में जानमाल का नुकसान होता है, लोगो को विस्थापन झेलना पडता है, शरणार्थी बनना पडता है, महिलाओ को अनेको पीड़ाओं और दुर्दशाओं को झेलना पडता है, देश व दुनिया में अनेकों तरह की समस्याए आती है/सुविधाएं प्रभावित होती है.

तो फिर युद्ध में अवसर क्या है?

पुराने हथियार काम में आ जाते हैं, हथियारो की परीक्षा भी हो जाती है, प्रतिस्पर्धी के हथियारो की क्षमता की सटिक जानकारी हो जाती है, नए हथियारों की मांग बढ़ती है, अत्याधुनिक व अधिक प्रभावी हथियारो की खोज की सम्भावनाएं उत्पन्न होती है. कई देशों की अर्थव्यवस्थाएं इसी व्यापार के सहारे चलती है तथा मंदी से उभरने में सहायता मिलती है. अधोसंरचनाओं के पुनर्निर्माण के अवसर (ठेके) मिलते हैं. दैनिक उपभोग की वस्तुओं की आपूर्ति प्रभावित होती है और सम्बंधित सामग्री के अभाव की आशंकाओं के मध्य प्रीमियम पर बिक्री (कालाबाजारी) से मुनाफे की मार्जिन बढ़ जाती है. कमीशन व चंदों में भारी वृद्धि की अटकलें/अनुमान भी लगाए जाते हैं.

आपदा में इतने अवसर हैं तो क्या कृत्रिम आपदा भी हो सकती है

हुनरमंद कुछ भी कर सकते हैं. कृत्रिम बौद्धिकता आ सकती है तो कृत्रिम आपदा कौन से खेत की मूली है. वैसे, बंगाल के अकाल को भी कृत्रिम आपदा ही माना जाता रहा है, जिसमें लाखों लोग अन्नाभाव में प्राण खो चुके थे. आपदा के अवसर पर बाजार में कृत्रिम अभाव दिखाकर कई गुना दामो (ब्लेक) में खरीदने/बेचने की चर्चाए व समाचार देखने/सुनने में आते हैं. युद्ध की आशंका के साथ ही आवश्यक वस्तुओं की कमी नजर आने लगती है जो युद्ध के मध्य तथा लम्बे खिंचने की सम्भावना के चलते गहनतम होती जाती है. मुनाफे का मार्जिन भी उसी अनुपात में बढता जाता है.

आर्थिक के अलावा कोई सामाजिक प्रभाव भी पड़ता है

सरकार अत्यावश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कुछ प्रतिबंध लगा सकती है, जिससे मृत्यु भोज व अन्य सामूहिक भोज के लिए मेहमानों की संख्या सीमित कर सकती है और परोक्ष रुप से सामाजिक बुराइयों को कम करने में सहायक हो सकती है. इस प्रक्रिया में भी निगरानीकर्ता एजेंसिया अपने अवसर ढूंढ ही लेती है.

समाज के स्तर पर सुधारात्मक कदम उठाए जा सकते हैं?

यह अवसर तो बनता है. इसी बहाने मृत्यू भोज बंद किया जा सकता है. मांगलिक कार्यो में मेहमानो की संख्या व भोज्य पदार्थो (मेनू) की सूची सीमित की जा सकती है. सोने के भाव में उछाल के चलते विवाह में नाममात्र का सोना देने तथा मेहमानो व मेनू को कम करने के कुछ प्रतीकात्मक निर्णय हाल ही में सुनाई दिए हैं. रंगीले व हठीले के वैश्विक आर्थिक व सामाजिक चिंतन के बीच घर के भीतर से गैस का सिलेंडर बदलने व नया सिलेंडर बुक करने का अनुरोध होता है और दोनों फिर मिलने के वादे के साथ जुदा होते हैं.

हिंदू नववर्ष

धर्मेन्द्र सिंह लोधी

संस्कृति, पर्यटन, धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व विभाग मंत्री, मध्य प्रदेश

आध्यात्मिक चेतना का नव प्रभात

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह शुभ दिन भारत की महान संस्कृति एवं गौरवशाली परंपरा का प्रतीक है। 'ब्रह्मपुराण' के अनुसार, ब्रह्माजी ने इसी दिन सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। ब्रह्माजी ने सुंदर सृष्टि का निर्माण किया और देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गंधर्व, ऋषि-मुनियों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं, वनस्पतियों इत्यादि से परिपूर्ण बनाया। सतयुग में इसी दिन ब्रह्मांड में विद्यमान ब्रह्मतत्व ने पृथ्वी पर साकार रूप लिया। इसी पवित्र दिन भगवान श्रीराम की अधर्म पर विजय का विजयोत्सव मनाने के लिए अयोध्यावासियों ने घर-घर में धर्मध्वज फहराकर एक नवीन राष्ट्रीय चेतना के साथ एक नए युग का प्रारंभ किया, जिसे 'रामराज्य' कहा जाता है।

भारतीय संस्कृति में हिन्दू नववर्ष समय, प्रकृति और चेतना के नए आरंभ का उत्सव है। भारतीय जीवन दर्शन में इसे नवजीवन,सृजन और मंगलारंभ का दिन माना गया है। इस दिन से प्रकृति में नव ऊर्जा का संचार होता है। इसलिए नए कार्यों की शुरुआत, संकल्प और साधना के लिए यह दिन अत्यंत शुम माना जाता है। भारतीय परंपरा में, चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा को सृष्टि के आरंभ का दिन माना गया है। इसलिए इसे 'हिंदू नववर्ष' के रूप में मनाया जाता है। इसे गुड़ीपड़वा, युगादी, बसंत ऋतु प्रारंभ एवं संवत्सर आरंभ आदि नामों से भी जाना जाता है। इसी दिन से पवित्र नवरात्रि का भी प्रारंभ होता है। हिंदू नववर्ष के प्रारंभ को वास्तव में आध्यात्मिक चेतना का प्रारंभ माना जा सकता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का यह शुभ दिन भारत की महान संस्कृति एवं गौरवशाली परंपरा का प्रतीक है। 'ब्रह्मपुराण' के अनुसार, ब्रह्माजी ने इसी दिन सृष्टि की रचना प्रारंभ की थी। ब्रह्माजी ने सुंदर सृष्टि का निर्माण किया और देवी-देवताओं, यक्ष-राक्षस, गंधर्व, ऋषि-मुनियों, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों, जीव-जंतुओं, वनस्पतियों इत्यादि से परिपूर्ण बनाया। सतयुग में इसी दिन ब्रह्मांड में विद्यमान ब्रह्मतत्व ने पृथ्वी पर साकार रूप लिया। इसी पवित्र दिन भगवान श्रीराम की अधर्म पर विजय का विजयोत्सव मनाने के लिए अयोध्यावासियों ने घर-घर में धर्मध्वज फहराकर एक नवीन राष्ट्रीय चेतना के साथ एक नए युग का प्रारंभ किया, जिसे 'रामराज्य' कहा जाता है।

इसी दिन से शक्ति की आराधना का वर्ष प्रारंभ होता है और माँ दुर्गा के नौ अलग-अलग स्वरूपों की साधना की जाती है। माँ शक्ति की साधना अपने अंतस की आत्मशक्ति और चेतना को जागृत करने का पर्व है। शास्त्रों के अनुसार, इसी दिन अभिमानी रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या में भगवान राम का राज्याभिषेक हुआ था। इस दृष्टि से सनातन हिंदू नववर्ष अधर्म और अहंकार पर विजय का प्रतीक माना जाता है। यह दिन मानवजाति को संदेश देता है कि जीवन में अवगुणों को त्यागकर सद्गुणों को आत्मसात् करने से ही जीवन का कल्याण होगा। युग में प्रथम सतयुग का आरंभ इसी दिन से हुआ है। गणितीय एवं खगोल शास्त्रीय गणनाओं के अनुसार, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारंभ माना जाता है। इसी दिन महान भारतीय गणितज्ञ भास्कराचार्य ने सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, माह और वर्ष की गणना करते हुए हिंदू पंचांग की रचना की थी तथा इसी पंचांग को आधार बनाकर राजा विक्रमादित्य ने भारतीय कैलेंडर विकसित किया था, जिसका प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है।

हिंदू नववर्ष का प्रारंभ दो ऋतुओं का संधिकाल है। इसमें रातें छोटी और दिन बड़े होने लगते हैं। प्रकृति नया स्वरूप धारण कर लेती है। ऐसा प्रतीत होता है, मानों प्रकृति ने नव पल्लव धारण कर नव संरचना के लिए

स्वयं में ऊर्जा का अपरिमित संचय कर लिय हो! मानव, जीव-जंतु, वनस्पति, यहाँ तक कि जड़-चेतन भी प्रमाद और आलस्य को त्यागकर सचेतन हो जाते हैं। बसंतोत्सव का आधार भी यही है। इसी समय बर्फ पिघलने लगती है, आमों में बौर आने लगते हैं, महुए की सुगंध प्रकृति को महकाने लगती है और प्रकृति की हरीतिमा नवजीवन का प्रतीक बनकर हमारे जीवन को एक नवीन चेतना प्रदान करती है।

हिंदू नववर्ष की प्रतिपदा का यह दिन हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान और हम सामाजिक- सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और पल्लवित करने वाला 'पुण्य दिवस' हैं। हमारे नववर्ष का संबंध जीवन जीने की विविधता से है। चैत्र मास का प्रारंभ भगवान नारायण का ही स्वरूप है। चैत्र मास का आध्यात्मिक स्वरूप इतना उन्नत है कि इसने ईश्वर को भी धरा पर उतार दिया है। चारों ओर पकी फसलों का दर्शन हमारे आत्मबल और उत्साह को बढ़ाता है। किसान को अपनी मेहनत का उचित फल मिलने का यही समय होता है। बसंत ऋतु के प्रारंभ से चारों ओर की प्रकृति उल्लास, उमंग, खुशी और पुष्पों की सुगंध से परिपूर्ण हो जाती है। हिंदू नववर्ष से बसंत ऋतु का प्रारंभ होता है। बसंत ऋतु में उत्साहवर्धक, आह्लाद एवं समशीतोष्ण वायु होती है। बसंत ऋतु के आगमन पर वृक्षों में नए कोपल आने लगते हैं और पेड़-पौधे हरे-भरे दिखाई देते हैं। इस प्रकार हिंदू नववर्ष जीवन के पुर्नउद्भव का परिचायक है। पतझड़ के बाद नई कोपल का आना, अंधकार के बाद प्रकाश के आने जैसा है। हिंदू नववर्ष का प्रारंभ एक नई चेतना और विश्वास का द्योतक है, जो मानवजाति के लिए नई ऊर्जा का संचार करता है।

हिन्दू नव वर्ष भारतीय संस्कृति की उस महान परम्परा का प्रतीक है, जिसमें धर्म, दर्शन, प्रकृति और विज्ञान का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह समय नव ऊर्जा, नव चेतना और मानवता के कल्याण के संकल्प का समय है। हिन्दू नव वर्ष हमें याद दिलाता है कि समय का हर नया चक्र हमें अपने जीवन को सुधारने, समाज को बेहतर बनाने और विश्व में शांति स्थापित करने का अवसर देता है। आज जब संपूर्ण विश्व अनेक अस्थिरताओं और संघर्षों से जूझ रहा है, तब भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना मानवता को प्रेम, करुणा, सद्भाव और शांति का संदेश देती है। क्योंकि यही वे मूल्य है जो विश्व को स्थिरता और संतुलन प्रदान कर सकते है।

सभी को हिन्दू नववर्ष की मंगलकामनाएँ।

दृष्टिकोण

राजशेखर व्यास

अपर महानिदेशक, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी, आकाशवाणी महानिदेशालय

हम क्यों भूलते जा रहे हैं विक्रम संवत्

'विक्रम संवत्' के दो हजार वर्ष का समाप्त होना भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। धूमिल अतीत में विक्रम के स्मारक स्वरुप जिस विक्रम संवत् का प्रर्वतन हुआ था, उसके पथ की वर्तमान रेखा यद्यपि अंधकार में डूबी है परन्तु डोर के सहारे हम अपने आपको उस श्रृंखला के क्रम में पाते है,जिसके अनेक अंश अत्यंत उज्जवल एवं गौरवमय रहे हैं। ये दो हजार वर्ष तो भारतीय इतिहास के उतरकाल के ही अंश है। विक्रम के उद्भव तक विशुद्ध वैदिक संस्कृति का काल, रामायण और महाभारत का युग, महावीर और गौतम बुद्ध का समय, पराक्रम सूर्य चन्द्रगुप्त मौर्य एवं प्रियदर्शी अशोक का काल, अंततः पुष्यमित्र शुंग की साहस गाथा सुदूरभूत की बातें बन चुकी थी। वेद, ब्राहमण, उपनिषद, सूत्र -ग्रंथ एंव मुख्य स्मृतियों की रचना हो चुकी थी। वैयाकरण पाणिनी और पतंजलि अपनी कृतियों से पंडितों को चकित कर चुके थे और कौटिल्य की ख्याति सफल राजनीतिज्ञता के कारण फैल चुकी थी। उन पिछले दो हजार वर्षो की लंबी यात्रा में भी भारत के शौर्य ने उसकी प्रतिभा के शौर्य ने उसकी विद्वता ने जो मान स्थित कर दिए है,वे विगत शताब्दियों के बहुत कुछ अनुरुप हैं। विक्रम संवत् के प्रथम हजारों वर्षो मे हमने मात्र शिवनागों,समुद्रगुप्त,चंद्रगुप्त, विक्रमादित्य, स्कंदगुप्त, यशोधर्मन, स्कंदगुप्त,यशोधर्मन, विष्णुवर्धन आदि के बल और प्रताप के सम्मुख विदेशी शक्तियों को थर-थर कांपते हुए देखा, भारत के उपनिवेश बसते देखे, भारत की संस्कृति और उसके धर्म का प्रसार बाहर के देशों में देखा। कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ आदि की काव्य-प्रतिभा तथा दण्डि और बाण भट्ट की विलक्षण लेखन-शक्ति देखी, कुमारिल भट्ट और शंकराचार्य का बुद्धि-वैभव देखा और स्वतंत्रता की अग्नि को सदैव प्रज्जवलित रखने वाली राजपूत जाति के उत्थान व सगंठन को देखा । हालाँकि दूसरी सहस्त्राब्दी में भाग्य चक्र की गति थोडी सी विपरीत हो गई, उसने उपनिवेशों का उजडना दिखाया और भारतीयों की हार तथा बहुमुखी पतन भी हमने देखा। परंतु उनकी आंतरिक जीवन-शक्ति का ह्रास नहीं हुआ और हमने यह भी दिखा दिया कि गिरकर भी कैसे उठा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति के अभिमानियों के लिए यह कम गौरव की बात नहीं-आज भारतवर्ष में प्रवर्तित विक्रम संवत्सर, बुद्ध-निर्वाण काल-गणना को छोडकर संसार के प्रायः सभी प्रचलित ऐतिहासिक संवतों से अधिक प्राचीन हैं।

'विक्रम', 'यह था' या 'वह', यह विवाद केवल अनुसंधान प्रिय पंडितों का समीक्षार्थ विषय है। आज संपूर्ण विश्व में जिस प्रकाशपुंज की विमलधवल कीर्ति फैल रही है वह कहां से और कैसे उद्भव हो गई है, वह तो इतिहासकर्ताओं की अनुसंधानशाला तक मर्यादित है। उनसें उच्चकोटि के मानसमूह तो बरसो से 'विक्रम' को अपने हृदय में संजोए बैठे हैं। दरअसल 'विक्रम' में हम अपने विशाल देश की परतंत्र पाश-पीडा से मुक्ति दिलाने वाली समर्थ शक्ति की अभ्यर्थना करते है। इसकी पावन स्मृति की धरोहर संवत् वर्षकाल गणना की स्मरण मणि की तरह इतिहास की श्रृंखलाएं भी एक-दूसरे से जुडी चली जाती है। विक्रम, कालिदास और उज्जयिनी हमारे स्वाभिमान, शौर्य और स्वर्णयुग के अभिमान का विषय है।

उसी उज्जयिनी में महर्षि सान्दीपनी वंश में उत्पन्न पद्मभूषण, साहित्य वाचस्पति स्व.पं. सूर्यनारायण व्यास ने विक्रम संवत् के दो हजार वर्ष पूर्ण होने पर एक मासिक पत्र 'विक्रम' का प्रकाशन आरंभ किया। पं. व्यास का अपना निजी प्रेस था जहां से वे अपने पंचांग का प्रकाशन करते थे। 'विक्रम' मासिक का प्रकाशन एक विशेष उद्देश्य को लेकर किया गया था। विशेषकर उन दिनों जब हिन्दी में चांद, हंस, वीणा, माधुरी, सुधा, सरस्वती जैसी प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका हिन्दी में सुस्थापित थी। पं. व्यास का उज्जैन जैसे छोटे से कस्बे से 'विक्रम' का प्रकाशन दुस्साहस ही कहा जाएगा। मगर 'विक्रम' तो मानो उनके बल, विक्रम, पुरुषार्थ का परिचायक ही बन गया था।

हजारों वर्षो से हमारे इतिहास को जो विकृत और धूमिल किया जा रहा था, उससे पं. व्यास मानो लोहा लेने खड़े हुए थे, अर्से से हमे पढ़ाया जा रहा था, हम मुगलों के, अंग्रेजों के गुलाम रहे है। हम शोषित, पीडित और गुलामों को पं. व्यास ने एक प्रबल बल, विक्रम और पुरुषार्थ- पराक्रमी नायक, चरित्र नायक संवत् प्रवर्तक सम्राट विक्रमादित्य दिया और बताया कि हम आरंभ से ही परास्त, पराजित, पराभूत और शोषित नही रहे है बल्कि 'शक' और हूणों को परास्त करने वाला हमारा नायक शकारि विक्रमादित्य विजय और विक्रम का दूसरा प्रतीक है। कालिदास समारोह के जन्म से भी पुरानी घटना है यह, जब उज्जयिनी में पं.व्यास ने विक्रम द्विसहस्त्राब्दि समारोह समिति का गठन कर सम्राट विक्रम की पावन स्मृति में चार महत् उददेश्यों की स्थापना का संकल्प लिया, वे उददेश्य थे विक्रम के नाम पर एक ऐसे विश्वविद्यालय की स्थापना जो साहित्य, शिक्षा, कला, सस्कृति की त्रिवेणी हो। वो विक्रम कीर्ति मन्दिर नाट्यशाला स्थापना और विक्रम स्मृति ग्रंथ का प्रकाशन हो।

इसमें कोई शक नहीं कि विक्रम द्विसहस्त्राब्दी की उनकी इस योजना में उनके सबसे अंतरंग स्नेह सहयोगी महाराजा जीवाजीराव सिंधिया का विशेष सहयोग रहा। 'विक्रम-पत्र' के माध्यम से जब यह योजना देश के सम्मुख पं.व्यास ने रखी थी, तब भी वे नहीं जानते थे कि उनकी इस योजना का इतना सम्यक् स्वागत होगा। विशेषकर वीर सावरकर और के.एम.मुंशी जी ने अपने पत्र 'सोशल वेलफेयर' में इस योजना का प्रारुप संपूर्ण विवरण के साथ विस्तार से प्रकाशित किया और सारे देश से इस पुण्य कार्य में पूर्ण सहयोग देने की प्रार्थना की।

महाराज देवास ने इस आयोजन के लिए सारा धन देना स्वीकार किया मगर शर्त यह रखी गई कि सारे सूत्र उनके हाथों में रखे जाए । मगर विधि को कुछ और ही मंजूर था, पं. व्यास अपने व्यक्तिगत कार्यवश मुंबई गए और वहां मुंशीजी से मिलकर योजना पर विस्तार से चर्चा की, तभी महाराजा सिंधिया का उन्हें निंमत्रण मिला। महाराजा जीवाजीराव सिंधिया ने पंडित व्यास को बताया कि वे इस योजना को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते है और इस कार्य को एक समिति बनाकर आगे बढ़ाना चाहिए,यह चर्चा कुछ ही क्षणों में हो गई। जब पं. व्यास महाराज से मिलकर कक्ष से बाहर ही निकले थे कि महाराज ने पुनः आवाज़ दी और विस्तार से चर्चा का पुनः आमंत्रण दिया। अगली मुलाकात दो-चार मिनट भी नहीं, लगभग ढाई घंटे की हुई और इस चर्चा ने तो सारी रुपरेखा ही बदल दी, जो कल्पना की गई थी उससे व्यापक रुप से समारोह करने की बात तय हुई और इस तरह पं. व्यास सप्ताह भर ग्वालियर रुके और रोजाना घंटों-घंटो विचार विनिमय हुआ। महाराज से पं. व्यास का अंतरंग आत्मीय संबंध यूं तो सन् 1934 से था। मगर इस संबंध में ज्योतिष ही प्रमुख कड़ी था। यह पहला अवसर था जब उन्होनें एक विशिष्ट विषय पर उनसे चर्चा की थी।

महाराजा का विचार, 'विक्रम उत्सव' के लिए पचास लाख की धनराशि एकत्रित कर अनेक महत्वपूर्ण कार्य आरंभ करना था, विश्वविद्यालय के लिए धनराशि शासन की और से दी जानी थी। इसके सिवा उज्जैन के प्रमुख धार्मिक स्थान और ऐतिहासिक स्थानों के सुधार के लिए शासन की ओर से धनराशि दी जानी थी। इसके सिवा उज्जैन के प्रमुख धार्मिक स्थान और एतिहासिक स्थानों के सुधार के लिए शासन के अनेक विभागों द्वारा सहयोग देने का निश्चय किया गया। तदनुसार महाकाल मंदिर , हरसिद्धि मंदिर और क्षिप्रातट पर सुधार कार्य आरंभ हो गए थे। जहाँ जहाँ ये सुधार कार्य हुए वहां पं. व्यास ने, जो स्वयं संस्कृत के सुकवि थे, यह श्लोक अंकित करवा दिया था।-''द्वि सहस्त्रमिते वर्षे चैत्रे विक्रम संवत्सरे, महोत्सव सभा सम्यकः जीर्णोद्धारमकारयत्।''

जैसे-जैसे समारोह का कार्य प्रगति कर रहा था, देश के विभिन्न भागों में एक सांस्कृतिक वातावरण बन गया था। लगभग उसी समय पत्र-पत्रिकाओं में रवीन्द्रबाबू और निराला ने भी 'विक्रम' पर कविताओं का सृजन किया था-रवीन्द्र बाबू की दूर बहुत दूर क्षिप्रातीरे... और निराला की 'द्विसहस्त्राब्दि' कविता पठनीय ही नही संग्रहणीय भी है। हिन्दू महासभा के तत्कालीन अध्यक्ष के समर्थन और सहयोग से सारे देश में चेतना फैली थी। इसी दरम्यान मियां मियां जिन्ना ने अपने एक भाषण मे इस उत्सव का विरोध किया। जिन्ना के विरोध से सरकार के भी कान खड़े हो गए, चूंकि वह समय भी ऐसा था, विश्व-युद्ध के आसार सामने थे, ब्रिटिश सरकार चैकन्नी हो गई। उन्हें पं. व्यास के इस आयोजन में क्रांति या विद्रोह की बू दिखी क्योंकि एक साथ 114 देशी महाराजा एक जगह विक्रम उत्सव के नाम पर इकट्ठा हो रहे थे, निस्संदेह इस पर्वरंग में पं. व्यास की यह परिकल्पना भी छुपी थी। शौर्य और विक्रम उत्सव के इस उत्सव के अवसर पर हमारे खोये बल, पराक्रम की चर्चा देशी राजाओं के रक्त में उबाल अवश्य ले आएगी। वैसे इस आयोजन में हिन्दू-मुस्लिम भेद-भाव को कोई जगह नही थी किंतु जिन्ना के विरोध से वातावरण में विकार पैदा हो गया। उस समय पं. व्यास ने नवाब भोपाल को शासकीय स्तर पर समारोह मनाने के लिए लिखा। नवाब ने अपने कैबिनेट में योग्य विचार करने का आश्वासन दिया। चेतना फैल रही थी, जागृति फैल रही थी। मुंबई में बडे पैमाने पर यह समारोह आयोजित किया गया। देश की हजारों सभा-संस्थाओं ने समारोह की तैयारी की। लगभग उसी समय प्रख्यात फिल्म निर्माता-निर्देशक विजय भट्ट ने पं. व्यास के आग्रह पर 'विक्रमादित्य' सिनेमा का निर्माण आरम्भ किया, जिसके संवाद, पटकथा और गीत-लेखन का कार्य भी उन्होनें व्यासजी के परामर्श से किया। इस फिल्म में 'विक्रमादित्य' की मुख्य भूमिका भारतीय सिनेमा जगत के महानायक पृथ्वीराज कपूर ने निभाई थी। पृथ्वीराज जी उस समय पं. व्यास के आवास 'भारती भवन' में ही ठहरे थे।

तब से जो आत्मीयता उन दोनों के मध्य स्थापित हुई थी, वह अंत तक बनी रही। बाद के बाद के दिनों में पृथ्वीराज कपूर जी ने ' कालिदास समारोह' में अपनी नाटक मंडली को लाकर स्वयं नाटक भी किए और अपने से होने वाली सारी आय कालिदास समारोह के लिए प्रदान कर दी।

विक्रम कीर्ति मंदिर का निर्माण कर उसमें पुरात्तव संग्रहालय, चित्रकलाकक्ष, प्राचीन ग्रंथ संग्रहालय आदि रखने का निश्चय किया गया। कुछ समय बाद ही रियासतों का विलनीकरण हुआ, मध्य भारत का निर्माण हुआ और विश्वविद्यालय निर्माण को लेकर अनेक उलझन, प्रंपच और अडंगे लगाए गए। चूंकि उस वक्त इंदौर और भोपाल तक में विश्वविद्यालय नहीं थे, अतः वहाँ के अखबारों और स्वार्थी राजनेताओं ने पं.व्यास के इस महान कार्य में असंख्य बाधाएं उपस्थित की।

उज्जियनी में प्रति वर्ष 12 वर्षो में सिंहस्थ पर्व मनाया जाता है। 1945 में जब सिंहस्थ पर्व आया तब देशभर के असंख्य आचार्य, संत -साधु, संत-महंत उज्जयिनी आए, तब पं. व्यास जी ने अपने व्यक्तिगत संपर्को से प्रयास कर उन्ही के नेतृत्व में विक्रम महोत्सव तीन रोज तक मनाया। साधु, संतो के 121 हाथियों, लाजमों, लवाजमों के साथ लाखों लोगों की उपस्थिति में 3 दिनों तक भव्य आयोजन महत् पैमाने पर मनाया गया। देशभर में विक्रमादित्य का बहुत-सा साहित्य विविध भाषाओं में प्रकाशित हुआ। देशभर में सांस्कृतिक लहर आ गई।'विक्रम द्विसहस्त्राब्दि समारोह समिति' ने भी 'विक्रम स्मृति ग्रंथ' का प्रकाशन किया जैसा कि प्रायः महाभारत के बारे में कहा जाता है कि जो महाभारत में है, वही भारत में हैं और जो महाभारत में नहीं है, वह कही भी नहीं हैं। वैसा ही वृहदाकार 3 भाषाओं में यह ग्रंथ प्रकाशित हुआ।

क्या किसी नगर के इतिहास में यह कम महत्वपूर्ण घटना है कि पद और अधिकार से वंचित एक व्यक्ति ने एक पूरे शहर को एक युग से दूसरे युग में रख दिया। व्यासजी ने विक्रम, कालिदास या उज्जयिनी के नाम पर मंदिर मठ नहीं बनवाए, अपितु शिक्षा अनुसंधान और कला सस्कृति के शोध सस्थान और विश्वविद्यालय का निर्माण करवाया। आज के विक्रम वि.वि के कुलपति भी शायद यह नहीं जानते कि विक्रम वि.वि बना कैसे ? वे पं. व्यास का नाम हटाकर विक्रम को चक्रम में पहले ही बदल चुके है।

'हिन्दुस्तान' ,पंजाब केसरी' नई दुनिया इस देश में ऐसे राष्ट्रीय समाचार पत्र है जो अपने मुख पृष्ठ पर विक्रम संवत् को ही प्रमुखता देते आए है। मेरे व्यक्तिगत अनुरोध को स्वीकार कर स्व. राजेन्द्र माथुर (तत्कालिन सम्पादक) ने 'नवभारत टाइम्स' के मुख्य पृष्ठ पर विक्रम संवत देना आरंभ कर दिया था। मगर अभी भी कानों में कोई पिघला हुआ सीसा डालता है, जब हम प्रातः आकाशवाणी से रेडियो के कान उमेठते ही सुनते है, आज दिनांक..... है। तद्नुसार शक संवत्....।

नव वर्ष

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

विक्रम संवत् 2083 के स्वागत में हर्षित धरा-गगन

चैत्र शुक्ल पक्ष प्रतिपदा अर्थात् वर्ष प्रतिपदा, यह तिथि हिन्दू काल गणनानुसार नव वर्ष के प्रारम्भ का शुभ दिन है। इस वर्ष 19 मार्च को 'रौद्र' नामक विक्रम सम्वत् 2083 का प्रथम दिवस है। प्रत्येक संवत् वर्ष का एक नाम होना, विक्रम सम्वत् की अपनी विशेषता है। 'सिद्धार्थ' नामक सम्वत् की विदाई कर लोक 'रौद्र' नामक सम्वत् का स्वागत-अभिनंदन करेगा। रौद्र नामक सम्वत् वर्ष के राजा बृहस्पति होंगे जो ज्ञान, विवेक और धर्म के कारक देव हैं तथा मंगल मंत्री के रूप में होंगे जो प्रजा में साहस, ओज और ऊर्जा का संचार करेंगे। हालांकि भारत वर्ष में विश्व के अन्य देशों की तरह मुख्य रूप से अंग्रेजी ग्रेगेरियन कलैंडर के अनुसार ही कार्य-व्यवहार संपादित होते हैं पर आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्कारों के निर्वहन् का आधार विक्रमी संवत् ही है। वर्तमान में विश्व में प्रचलित काल मापन प्रणालियों यथा हिन्दू, चीनी, मिस्री, पारसी, तुर्की, यहूदी, रोमन, हिजरी में हिन्दू काल गणना प्रणाली सर्वाधिक प्राचीन, प्रामाणिक, श्रेष्ठ और वैज्ञानिक है। वर्ष प्रतिपदा कई ऐतिहासिक घटनाओं और संदर्भों को सहेजे हुए है। इसी दिन प्रातःकाल से ब्रह्मा जी ने सृष्टि रचना प्रारम्भ की थी। लंका विजय पश्चात् अयोध्या में श्रीराम का राज्याभिषेक हुआ था तो युधिष्ठिर ने भी राज्यारोहण कर अपने नाम का सम्वत् चलाया था। सिखों के द्वितीय गुरु अंगद देव तथा सिंधी समाज के संत झूलेलाल का प्राकट्योत्सव भी है। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना भी इसी तिथि को की थी। डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार ने इसी दिन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना 1925 में की थी। शक्ति और भक्ति का प्रतीक पर्व चैत्रीय नवरात्र भी प्रारम्भ होता है। ग्रिगेरियन कलैंडर में 57 जोड़ने पर विक्रम संवत् मिल जाता है। नव संवत् के स्वागत में धरा-गगन आनंदित एवं हर्षित हैं।

केवल हिन्दू काल प्रणाली में ही निमेष से लेकर (बल्कि उससे भी छोटी इकाईयों परमाणु, अणु, त्रसरेणु, त्रुटि, बोध, काष्ठा और लव आदि) युग, मनवन्तर और कल्प तक की गणना व्यवहार में है। किसी भी अनुष्ठान एवं सामान्य धार्मिक कर्म-काण्ड प्रारम्भ करने के पूर्व यजमान हाथ में जल, कुश, पुष्प, अक्षत आदि लेकर संकल्प करते हुए मंत्र पढ़ता है जिसमें युगाब्द, मन्वंतर, संवत्, तिथि, दिन, समय, मास आदि सहित ब्रह्माण्ड की आयु तक की गणना हमारी परम्परा में जीवनचर्या में सम्मिलित है और इस प्रकार हमने अनन्त काल-यात्रा को वर्तमान से जोड़े रखा है। हिन्दू काल गणना सूर्य, चन्द्र व पृथ्वी की गतियों पर आधृत है। एक वर्ष को 2 अयन, 12 मास, 24 पक्ष, 52 सप्ताह, 27 नक्षत्रों में विभाजित किया गया है। सैकड़ों वर्षों बाद होने वाली आकाशीय घटनाओं, सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण, पूर्णमासी, अमावस्या, पर्व-त्योहार आदि की सटीक घोषणा हिन्दू पंचांग में ही सम्भव दिखायी देती है। पंचांग से ही कुम्भ मेला के स्नान-पर्व के समय, मुहूर्त आदि की जानकारी प्राप्त कर लाखों श्रद्धालु पवित्र नदियों में डुबकी लगाने, हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक बिना किसी विज्ञापन एवं प्रचार के पहुँचते हैं। यह दृश्य भारतीय संस्कृति से अपरिचित विदेशियों को विस्मय में डाल देता है। ज्योतिषविद् लगध ने ग्रन्थ 'ज्योतिष वेदांग' में काल मापन की प्रणाली प्रथम बार प्रस्तुत करते हुए काल मापन के यंत्र भी बनाये। सम्राट विक्रमादित्य की राजसभा के नौरत्नों यथा धनवन्तरि, क्षपणक, अमर सिंह, शंकु (शंशकु), वेतालभट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि में से वराहमिहिर ने 'पंच सिद्धान्तिका' और 'वृहत्संहिता' जैसे विज्ञान ग्रन्थ विश्व को प्रदान किए। जिसमें ज्योतिष, भूगर्भशास्त्र, पारिस्थितिकी, द्रवयांत्रिकी पर महत्वपूर्ण कार्य प्रस्तुत किया गया है। काल-ज्ञान हेतु उज्जयिनी भारत का केन्द्र बिन्दु है जैसे इंग्लैण्ड में ग्रीनविच है। जयपुर एवं दिल्ली की 'जन्तर मन्तर' वेधशालाएं आज भी सभी का ध्यान खींचती हैं। अन्य काल प्रणाली तुलनात्मक रूप से अवैज्ञानिक एवं अप्रमाणिक हैं। रोमन कलेण्डर में अभी 400 वर्ष पूर्व तक संशोधन होते रहे हैं। कभी रोमन कलेण्डर में 10 महीने होते थे, अगस्त और फरवरी महीनों में 30 दिन होते थे।

विश्व में हमें नव वर्ष के स्वागत के दो दृश्य दिखाई देते हैं जो सम्बंधित समाज की मानवीय दृष्टि, समग्र चिंतन और चेतना को प्रतिबिम्बित करते हैं। पहली जनवरी को दुनिया भर में नये वर्ष का स्वागत बड़े-बड़े आयोजन करके किया जाता है जिसमें पटाखे फोड़ने से आकाश धुआं से भर जाता है। देर रात तक पार्टियों का दौर चलता है। मदिरा सेवन करते हैं एवं साथियों के नृत्य करते हैं। प्रकृति ठंड से सिकुड़ी-सहमी बर्फ की चादर ओढ़े नीरवता समेटे निद्रा में रहती है। न कहीं कोई खिलखिलाती-महमहाती फूलों की बेलें दिखतीं न फसलों का जीवंत जीवन। न पक्षियों का मधुर कलरव सुनाई देता, न ही भौंरों का गुंजार। न तितलियों के इंद्रधनुषी रंग दिखते न ही गिलहरियों, नेवलों की धमाचौकड़ी। पवन में न ऊर्जा, उमंग भरी सरसराहट और न ही मादक सुवास। हवा बहती है तो लगता है प्राणिमात्र को वेदना का शूल चुभाते देह की पोर-पोर में टीस उत्पन्न कर रही है। आम जन में न कुछ नया पाने का उत्साह, न ही कुछ नया रचने-गढ़ने की ललक। वह तो स्वयं को गर्म कपड़ों में लपेटे गठरी बना बैठा रहता है। नदियों का जल बर्फ बन जल-जीवों के लिए संकट का कारण बनता है। खेतों में श्वेत चादर के नीचे बीज कराहता है। लेकिन हिन्दू नव वर्षागमन के पूर्व ही प्रकृति सुन्दरी मानो उसके स्वागत में सज-धज नवल रूप धारण कर लेती है। खेतों में अनेक फसलें अपने यौवन के अल्हड़पन में वासन्ती पवन के प्रेम में डूबी आनन्दमग्न झूमती दिखाई पड़ती हैं। आंखों को सुख देता खेतों में दूर-दूर तक फैला सरसों का पीलापन है तो अलसी का नीलापन भी। मटर के दूध से सफेद फूल हैं तो मसूर की लालिमा भी। पलाश प्रीति के केसरिया रंग से धरा के भाल को सुशोभित कर रहा है तो सेमर खुश हो लाल सुमन उछाल रहा है। ताल-कूप का नीर दर्पण बन तरुणियों के विधु-वदन को स्वयं में सहेज खुश हो रहे हैं तो स्वच्छ सलिला सरिताएं प्राणियों को अमिय पान करने को न्यौता दे रही हैं। तोता, मैना, गौरैया, बसंता की मिठास भरी चहचहाहट है तो कोयल की मनहरण कूक भी। अरण्य में स्पन्दन है। लगता है जीवन सांसें ले रहा है और प्राणियों में आशा का संचार कर लोक सम्मुख 'चरैवेति-चरैवेति' के वैदिक संदेश की चिट्ठी बांच रहा है। कचनार, हरसिंगार, गुड़हल और गुलाब के विविध रंग बिखरे हैं तो आम की बौरें मन बौरा रही हैं। चने के होला की महक परिवेश में तैर रही है तो गन्ने के रस से बनाये जा रहे गुड़ की सोंधापन भी। शहनाई की स्वर लहरियां हैं तो मृदंग की कोमल थाप भी। पर न कहीं शोर है न हिंसा-अशान्ति, न कठोर-कलुष वचन हैं न पीड़ा-प्रताड़ना का रुदन। बस, चतुर्दिक सह-अस्तित्व, न्याय, करुण, दया, ममता, समता, सौहार्द, बंधुत्वभाव, सहयोग की भावना एवं स्वर हैं। तभी तो भोर से ही देवालयों में विश्व कल्याण की भावना से लोक देवार्चन और प्रार्थना कर रहा है। यज्ञ-हवन आदि हो रहे हैं और गोघृत, शर्करा, तिल, जौ, अक्षत, गुड़, गुरिज एवं औषधीय द्रव्यों की आहुति दी जा रही है। द्वार-द्वार पर मंगल वाद्य बज रहे हैं। जन सामान्य घरों में भगवा पताकाएं फहराते हैं और कलश स्थापित कर बड़ों का आशीर्वाद लेते हैं। मलय बयार बहने से लोकजीवन में उल्लास-उमंग का प्रवाह है और मानवता के कल्याण का संकल्प भी। यह नव संवत लोक के लिए सुख, समृद्धि, शान्ति, सहकार, उत्कर्ष, उल्लास एवं अमित उत्साह का वाहक सिद्ध होगा तथा विश्व हिंसा, अराजकता, कलुष-कुभाव, व्यभिचार, वैचारिक नग्नता से मुक्त हो प्रकृति का पोषण कर मानवीय मूल्यों के संवर्धन हेतु बद्ध परिकर होगा, ऐसा विश्वास करते हुए सभी के प्रति शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

विक्रमोत्सव 2026 के अंतर्गत 19 मार्च को विधायक नीना वर्मा के मुख्य आतिथ्य में सूर्य उपासना कार्यक्रम आयोजित होगा

धार। मध्यप्रदेश शासन, संस्कृति विभाग द्वारा सृष्टि आरंभ दिवस, वर्ष प्रतिपदा एवं विक्रम संवत् 2083 के शुभारंभ के अवसर पर 19 मार्च को प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों में पूर्वान्ह सूर्य उपासना कार्यक्रम होंगे। आयोजन के अंतर्गत परंपरानुसार श्री महाकालेश्वर मंदिर, उज्जैन के शिखर पर स्थापित किए जाने वाले ब्रह्मध्वज को जिले के प्रमुख मंदिरों एवं स्थलों पर स्थापित किया जाएगा। साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अंतर्गत ''सम्राट विक्रमादित्य'' विषय पर नाट्य प्रस्तुति का मंचन भी किया जाएगा।निर्देशानुसार विक्रमोत्सव 2026 वर्ष प्रतिपदा, विक्रम संवत 2083 के आरंभ के शुभ अवसर पर सूर्य उपासना पर्व का आयोजन विधायक धार श्रीमती नीना वर्मा के मुख्य आतिथ्य में 19 मार्च को प्रात: 10 बजे किया जा रहा है। यह कार्यक्रम पीजी कॉलेज सभागृह में आयोजित किया जाएगा। इसके अंतर्गत मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल द्वारा ''सम्राट विक्रमादित्य'' नाट्य मंचन हेतु नाट्य एवं कला दल विभिन्न जिलों में अपनी प्रस्तुति देंगे।

जिले की आंगनवाड़ियों में 24 मार्च को विद्यारंभ प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम

धार। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार के निर्देशानुसार जिले की सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में पंजीकृत 5 से 6 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों को प्राथमिक शाला में सहज रूप से स्थानांतरित करने एवं प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा (ECE) को सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से विद्यारंभ प्रमाण पत्र प्रदान किए जाएंगे। इस पहल के माध्यम से आंगनवाड़ी केंद्रों द्वारा दी जा रही प्रारंभिक शिक्षा की महत्ता को रेखांकित किया जाएगा तथा समुदाय में इन केंद्रों को एक प्रमाणिक शैक्षणिक आधार के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया जाएगा। इससे अभिभावकों को भी अपने बच्चों को नियमित रूप से आंगनवाड़ी भेजने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।जिले के सभी आंगनवाड़ी केंद्रों में चतुर्थ मंगलवार 24 मार्च को बाल चौपाल के अवसर पर उन बच्चों की ग्रेजुएशन सेरेमनी आयोजित की जाएगी, जिन्होंने प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा पूर्ण कर ली है और अब विद्यालय में प्रवेश के पात्र हैं। इस अवसर पर बच्चों को विधिवत विद्यारंभ प्रमाण पत्र वितरित किए जाएंगे। कार्यक्रम में स्थानीय जनप्रतिनिधियों, अभिभावकों, प्राथमिक शाला के शिक्षकों एवं सहयोगी संस्थाओं को आमंत्रित किया जाएगा, ताकि इस पहल को सामुदायिक सहभागिता के साथ सफल बनाया जा सके। जिला कार्यक्रम अधिकारी सुभाष जैन ने बताया कि जिले में लगभग 37 हजार बच्चे 5 से 6 वर्ष आयु वर्ग के हैं, जिन्हें इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रमाण पत्र वितरित किए जाएंगे। इस संबंध में शासन से प्राप्त निर्देश परियोजना अधिकारियों, पर्यवेक्षकों एवं आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रदान कर दिए गए हैं। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के माध्यम से न केवल बच्चों के विद्यालय प्रवेश को प्रोत्साहन मिलेगा, बल्कि आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं एवं विभाग को भी प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा के क्षेत्र में एक नई पहचान प्राप्त होगी।

फाग की प्रस्तुति में आया महाभारत, रामायण, रविदास, अंबेडकर का प्रसंग

सोहागपुर। समाजसेवी गणेश अहिरवार के निवास पर होली मिलन समारोह पर संत शिरोमणि रविदास जी की फाग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर ग्राम बंदी छोड़ पिपरिया, ग्राम बड़वानी, ग्राम चीचली, ग्राम ठीकरी, ग्राम नयागांव, ग्राम तिघरा, ग्राम कुहाबर आदि के फाग मंडलों ने अपनी अपने प्रस्तुति दी। कार्यक्रम में समस्त फाग टीमों ने ढोलक, झाज मंजीरा आदि के साथ उत्कृष्ट प्रदर्शन करके नागरिकों का मंत्र मुग्ध कर दिया। फाग गायकों ने अपनी सांस्कृतिक विरासत की प्रस्तुति में महाभारत, रामायण, संत रविदास जी कथा एवं बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को लेकर अपनी अपनी प्रस्तुति दी। इस अवसर पर भैयालाल अहिरवार बंदी छोड़ पिपरिया, बाबूलाल अहिरवार, कुहावर, मनीराम अहिरवार ठीकरी, फूलसिंह अहिरवार तिगरा चंदन अहिरवार चीचली धर्मप्रसाद शिक्षक नंदकिशोर शिक्षक, पहलवान बक्शी, विनोद अहिरवार बड़वानी राजू अहिरवार बमोरी, संतोष अहिरवार चीचली, साइनराम अहिरवार बंदी छोड़ पिपरिया, आकाश बम्होरिया बंदी छोड़ पिपरिया, लखन लाल शिक्षक देवीसिंह खुराना नयागांव बलराम अहिरवार बाबई सहित कई नागरिक उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में समाजसेवी गणेश अहिवार ने सभी का आभार व्यक्त किया।

बैतूल में 98 हजार से ज्यादा कॉपियों का मूल्यांकन पूरा

30 मार्च तक का लक्ष्य, रोजाना 6 घंटे काम कर रहे शिक्षक

एस. द्विवेदी, बैतूल। शहर के एक्सीलेंस स्कूल में माध्यमिक शिक्षा मंडल की बोर्ड परीक्षाओं की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन का कार्य जारी है। 17 मार्च तक 98,857 उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन पूरा हो चुका है और 30 मार्च के लक्ष्य को पूरा करने के लिए शिक्षक प्रतिदिन 6 घंटे कॉपियां जांच रहे हैं। मूल्यांकन केंद्र पर डिकोडिंग प्रक्रिया पूरी होने के बाद ही कॉपियां जांचने के लिए मूल्यांकनकर्ताओं को दी जा रही हैं। मूल्यांकन कार्य में लगे प्रत्येक परीक्षक को प्रतिदिन 45 से 60 कॉपियां जांचने का लक्ष्य दिया गया है। प्रति कॉपी जांचने के लिए 15 से 16 रुपये का मानदेय मिलता है और यह कार्य प्रतिदिन लगभग 6 घंटे तक किया जा रहा है। वैल्यूएशन प्रभारी एवं एक्सीलेंस स्कूल के प्राचार्य सत्येंद्र उदयपुरे ने बताया कि कक्षा 12वीं की 82583 कॉपियां उत्कृष्ट स्कूल पहुंची है। इन कॉपियों का मूल्यांकन 125 परीक्षकों द्वारा किया जा रहा है। जिनके द्वारा 17 मार्च तक 82583 कापियां जांची एवं 29199 कॉपियों का मूल्यांकन होना शेष है। इसी तरह हाईस्कूल कक्षा 10 वीं की कुल 64913 कॉपियां प्राप्त हुई थी, जिसमें से 45,473 कॉपियों की जांच पूर्ण हो चुकी है। शेष कॉपियों का मूल्यांकन होना शेष है। उल्लेखनीय है कि हाईस्कूल और हायर सेकेंडरी की कुल 1,25,176 कॉपिया प्राप्त हुई है, जिसमें से 17 मार्च तक कुल 98857 कॉपियों की जांच पूर्ण हो चुकी है, वहीं 48,639 कॉपियों का मूल्यांकन होना शेष है।

कई विषयों का मूल्यांकन कार्य पूर्ण – सत्येन्द्र उदयपुरे सर ने बताया कि हायर सेकंडरी और हाईस्कूल की कुल 1,25,176 कॉपियां जांचने के लिए प्राप्त हुई थी। हायर सेकेंडरी की प्राप्त विषयों की कॉपियों में अर्थशास्त्र, अंग्रेजी, भौतिक शास्त्र, पशुपालन, संस्कृत, इतिहास, रसायन शास्त्र, कृषि विज्ञान, ब्यूटी वेलनेस और अपेरल विषय की कॉपियों की जांच पूर्ण हो चुकी है। शेष व्या. अध्ययन, गणित, जीव विज्ञान, बुक कीपिंग, रिटेल, हेल्थ केयर, आईटी, इलेक्ट्रॉनिक हा., हिन्दी, भूगोल, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, फसल उत्पादन विषय की कॉपियों की जांच चल रही है। इसी तरह हाई स्कूल की अंग्रेजी, आईटी, ब्यूटी वेलनेस, यूपीएस होम फ, प्लंबिंग विषय की कॉपी जांची जा चुकी है। इन कॉपियों का मूल्यांकन 16 मार्च और उससे पहले हो चुका है। शेष एग्रीकल्चर, गणित, संस्कृत विषय की कॉपी का मूल्यांकन कार्य जारी है।

मूल्यांकन कार्य में लगे 216 विषयक परीक्षक – हाईस्कूल कक्षा 10वीं और हायर सेकेंडरी 12वीं की बोर्ड परीक्षा की कॉपियों के मूल्यांकन के लिए 17 मार्च को करीब 2156 विषयक परीक्षक लगे थे। इसमें हाईस्कूल की कॉपियों के मूल्यांकन के लिए 134 और हायर सेकेंडरी के मूल्यांकन कार्य में 82 परीक्षक लगे हुए है। जिनके द्वारा प्रतिदिन 5 से 6 घंटे मूल्यांकन का कार्य किया जा रहा है। बताया जा रहा है कि विषय परीक्षकों को प्रति कॉपी जांचने के लिए उन्हें 15 से 16 रुपये का मानदेय मिलता है। वहीं परीक्षकों को 30 मार्च तक प्राप्त सभी विषयों की कॉपियों की जांच करने का लक्ष्य दिया गया है।

14 या 15 अप्रैल तक आ सकता है रिजल्ट – हाईस्कूल और हायर सेकेंडरी स्कूल की बोर्ड परीक्षाओं के मूल्यांकन का कार्य तेजी से चल रहा है। इससे अनुमान लगाया जा रहा है कि बोर्ड परीक्षाओं का रिजल्ट (परीक्षा परिणाम) 14 या 15 अप्रैल तक आ सकता है। क्योंकि 30 मार्च तक परीक्षकों को कॉपियों का मूल्यांकन करने का लक्ष्य दिया गया है। यदि परीक्षा परिणाम 14 या 15 अप्रैल तक घोषित कर दिए जाते हैं, तो विद्यार्थियों को काफी राहत मिलेगी। इससे अनुत्तीर्ण, पूरक या श्रेणी सुधार की परीक्षा देने वाले विद्यार्थियों को तैयारी के लिए लगभग 20 दिन का समय मिल सकेगा। केंद्र पर निर्धारित 30 मार्च की समय सीमा में मूल्यांकन कार्य पूरा करने के लिए शिक्षक लगातार जुटे हुए हैं।

इनका कहना है – बोर्ड परीक्षाओं के मूल्यांकन का कार्य जारी है। 17 मार्च तक कुल 98857 कॉपियों का मूल्यांकन कार्य हो चुका है। शेष 48639 कॉपियों का मूल्यांकन अभी जारी है। उम्मीद है कि समय सीमा के पूर्व ही इन कॉपियों का मूल्यांकन कार्य भी पूर्ण हो जायेगा।

– सत्येन्द्र उदयपुरे, वैल्यूएशन प्रभारी एवं प्राचार्य एक्सीलेंस स्कूल, बैतूल

आत्महत्या के लिए दुष्प्रेरित करने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। शाहपुर पुलिस ने आत्महत्या के लिए दुष्प्रेरित करने वाले आरोपियों के विरुद्ध कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। 18 मार्च को पुलिस ने धारा 194 बीएनएसएस की डायरी प्राप्त होने पर मर्ग जांच प्रारंभ की। जांच के दौरान मृतक देवेश वर्मा उर्फ गौतम पिता नर्मदाप्रसाद वर्मा (22) निवासी ग्राम सोहागपुर ढाना थाना शाहपुर के पिता से पूछताछ की गई। उनके कथन अनुसार ग्राम के ही साहिल वर्मा एवं उसके साथी हिमांशु वर्मा, सिद्धार्थ रजने तथा निशांत उर्फ अन्नू सिनोटिया द्वारा पिछले लगभग 3 माह से मृतक को एक लडक़ी से बातचीत करने की बात को लेकर लगातार शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा था। 12 मार्च को ग्राम जामपानी में आयोजित एक बारात के दौरान भी उक्त आरोपियों द्वारा मृतक के साथ हाथ-मुक्कों से मारपीट कर उसे अपमानित एवं प्रताड़ित किया गया। घटना से आहत होकर मृतक देवेश वर्मा ने घर लौटकर अपने ऊपर डीजल डालकर आग लगा ली। परिजनों ने तत्काल उपचार के लिए शाहपुर अस्पताल, तत्पश्चात जिला चिकित्सालय बैतूल एवं बाद में हमीदिया अस्पताल भोपाल ले जाया गया, जहां उपचार के दौरान 16 मार्च को उसकी मृत्यु हो गई। मर्ग जांच के आधार पर पाया गया कि आरोपियों द्वारा की गई लगातार शारीरिक एवं मानसिक प्रताडऩा के कारण मृतक ने आत्महत्या की। इस पर आरोपियों के विरुद्ध धारा 108 बीएनएस के अंतर्गत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। पुलिस ने इस मामले में आरोपी साहिल वर्मा पिता पवन वर्मा, उम्र 20 वर्ष, निवासी सोहागपुर ढाना थाना शाहपुर, हिमांशु वर्मा पिता परशुराम वर्मा, उम्र 20 वर्ष, निवासी ग्राम कुही थाना रानीपुर, निशांत उर्फ अन्नू सिनोटिया पिता निधिश सिनोटिया, उम्र 24 वर्ष, निवासी सोहागपुर ढाना थाना शाहपुर को गिरफ्तार कर लिया है, वहीं एक अन्य आरोपी सिद्धार्थ की गिरफ्तारी के लिए प्रयास जारी है। तीनों आरोपियों को 18 मार्च को गिरफ्तार कर न्यायालय में प्रस्तुत किया गया। बता दे कि इस मामले को लेकर मंगलवार शाम आक्रोशित परिजनों ने पुलिस पर कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाते हुए शव रखकर शाहपुर थाने का घेराव कर दिया है। परिजन दोषियों पर सख्त कार्रवाई की मांग पर अड़े हुए थे। जिसके बाद एएसपी ने दोषी पाए जाने पर आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की बात कही थी।

उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष विभाग मंत्री इन्दर सिंह परमार ने किया जिला आयुष विंग का निरीक्षण

बैतूल। प्रदेश के उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं आयुष विभाग मंत्री इन्दर सिंह परमार ने बुधवार को जिला चिकित्सालय स्थित जिला आयुष विंग का निरीक्षण कर वहां की व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने पंचकर्म, शिरोधारा सहित विभिन्न आयुष चिकित्सा पद्धतियों का अवलोकन किया। मंत्री श्री परमार ने सिकल सेल यूनिट के साथ आयुर्वेद एवं होम्योपैथी दवाओं के वितरण व्यवस्था की भी समीक्षा की और संबंधित अधिकारियों को दवाओं का वितरण सुचारू रूप से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि आयुष औषधियों का पर्याप्त स्टॉक बनाए रखा जाए तथा आवश्यकता अनुसार समय पर मांग प्रस्तावित की जाए। निरीक्षण के दौरान मंत्री श्री परमार ने आयुष विंग में साफ-सफाई एवं सुव्यवस्थित संचालन पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि जिले में आयुष चिकित्सा पद्धतियों को दृढ़ता से स्थापित करते हुए उनका प्रभावी एवं सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। इस अवसर पर मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, घोड़ाडोंगरी विधायक श्रीमती गंगाबाई उईके तथा जिला आयुष अधिकारी योगेश चौकीकर सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

परीक्षा समय पर तनाव प्रबंधन के विषय पर मनोबल सत्र का आयोजन

बैतूल। भीमराव रामराव अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय बैतूल में उच्च शिक्षा विभाग म.प्र. के तत्वावधान में महाविद्यालय के विद्यार्थियो के लिए परीक्षा पर तनाव प्रबंधन के विभिन्न पहलुओ पर आधारित मनोबल सत्र का आयोजन आनलाइन माध्यम से दिनांक 13, 14. 16 एवं 17 मार्च 2026 को दोपहर 3 बजे से 4 बजे तक किया गया। इस आनलाईन सत्रो में तनाव को कैसे कम करे, तनाव से अपने लक्ष्य प्राप्ति कैसे करें, जीवन में तालमेल बनाकर सफलता अर्जित की जा सकती है। इसके लिए प्रमुख वक्ता तन्मय जोशी सहायक प्राध्यापक एम्स, मनोज कुमार शर्मा आईपीएस महानिरीक्षक (मुंबई पुलिस) डॉ. रीतु नंदा (मनोवैज्ञानिक) एवं श्रीसत्यसाई सेवा संगठन मध्यप्रदेश द्वारा मेडिटेशन सत्र का आयोजन किया गया एवं तनाव के विभिन्न पहलुओ पर चर्चा की। इस आनलाईन सत्र को महाविद्यालय के विशाल सभागार में संचालक इंजीनियर ध्रुवप्रकाश अग्रवाल के साथ समस्त स्टाफ एवं बी.एड. स्कालर्स ने भाग लिया।

व्यस्तम मार्ग को मरम्मत की दरकार

खेड़ापति माता मंदिर के पास सफाई की गुहार

सोहागपुर। स्टेशन रोड स्थित स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के सामने काफी लम्बे समय से मालवीय काम्प्लेक्स में हेयर सेलून दुकानों के पास का रास्ता सबसे ज्यादा आवागमन है। यहां आनलाइन की दुकानें, यहीं स्टेंट बैंक ऑफ एवं केनरा बैंक की उपभोक्ताओं की सुविधा के लिए आफिस है। यहां प्रतिदिन सैकड़ों नागरिक दो पहिया वाहनों से आते जाते हैं। वहीं की वार्डों के नागरिक इसी रास्ते स्टेट बैंक सहित अन्य बैंक जानने के लिए इसी शार्ट रास्ते का इस्तेमाल करते हैं। पिछले महीने नगर पंचायत परिषद ने एक निजी लाज के आने जाने वाले रास्ते को बहुत ही अच्छी सीमेंट बनाकर लाभ पहुंचाया गया।तब मालवीय काम्प्लेक्स के दुकानदारों ने लाज के रास्ते की मरम्मत करने वाले नगर पंचायत परिषद के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस रास्ते की मरम्मत करने का आग्रह करते बताया था कि ढलान होने के कारण आज दिन यहां दो पहिया वाहन सिलस हो जाते हैं। इसकी हम मरम्मत करवा देंगे। लेकिन करीबन एक महीने से अधिक समय बीत जाने पर भी रास्ते की मरम्मत नहीं करवाई गई। ऐसा लगता है कि नगर पंचायत परिषद में की नवीन परिषद में इच्छा शक्ति की कमी के साथ नगर पंचायत परिषद पर किसी का अंकुश ही नहीं है। यह इससे भी यह सिद्ध होता है कि आए दिन नगर पंचायत परिषद के पार्षद वार्ड के कार्यों के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जाने को मजबूर रहते हैं। आज इसी संदर्भ में

मातापुरा वार्ड पार्षद भास्कर मांझी ने मातापुरा वार्ड में की सफाई व्यवस्था की कलई खोली है।कि विगत एक माह से सफाई को लेकर कई अनियमितताएं एवं लापरवाही की जा रही है। वार्डवासी स्वयं कचरे को इकट्ठा करके जलाने पर विवश है।रमजान शरीफ के पवित्र माह में भी मुस्लिम समाज के रहवासियों के घरो के आस-पास से लगातार शिकायतें आ रही हैं ।किंतु फिर भी व्यवस्थाओं में सुधार नहीं किया गया ।अब कल से चैत्र नवरात्रि प्रारंभ हो रही है। वार्ड स्थित माँ खेड़ापति मंदिर होने के कारण सम्पूर्ण नगरवासी सुबह 4 बजे से ही पूजन करने हेतु लगातार पूर्णिमा तक आते है। इसके साथ वार्ड में कई जगह ज्वारे (बाड़ी) व घट स्थापना भी होती है।

प्राचीन खेड़ापति माता मंदिर में सभी 15 वार्डों की मातृशक्ति, नागरिक आदि जलाभिषेक करने आते हैं। इस मंदिर एवं आस-पास की विशेष सफाई एक सप्ताह पहले कर ली जाती थी। आखिर नगर पंचायत परिषद आंखों मुदकर क्यों बैठी है,समझ से परे है। पार्षद भास्कर मांझी ने सोशल मीडिया पर अंत में लिया है ईद के कारण यहां जामा मस्जिद में सैकड़ों मुस्लिम समुदाय के नागरिक नमाज़ अदा करने आते हैं।कल से नवरात्रि पर्व भी प्रारंभ हो रहा है। ऐसे में सिर्फ एक दिन में कैसे व्यवस्थाओ को सुचारु कर पाएंगे?। आपने मुख्य नगर पालिका अधिकारी से निवेदन है आप स्वयं व्यवस्थाओं का जायजा ले । भास्कर मांझी ने सोशल मीडिया पर नागरिकों द्वारा कचरे के ढेर को जलाने का वीडियो भी डाला है।

सामाजिक सुरक्षा पेंशन बढ़ाने की मांग

पार्षद ने जनसुनवाई में मुख्यमंत्री के नाम दिया पत्र

आमला। शहर के वार्ड 5 के पार्षद राकेश शर्मा ने सामाजिक सुरक्षा पेंशन बढ़ाने की मांग को लेकर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को सौंपा। आज मंगलवार को जनसुनवाई में अनुविभागीय अधिकारी शैलेंद्र बडोनिया को मुख्यमंत्री के नाम दिए पत्र में पार्षद ने लिखा है कि प्रदेश के लगभग 56 लाख से ज्यादा सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत पेंशन लेने वाले तमाम बुजुर्ग विधवा, परित्यक्ता, दिव्यांग आदि सभी सामाजिक सुरक्षा पेंशनधारियों की पेंशन वर्तमान में 6 सौ प्रतिमाह है, जो बेहद कम है। वर्तमान हालात को देखते हुए इतनी कम राशि में ऐसे असहाय लोगों का गुजर बसर करना बेहद मुश्किल है। श्री शर्मा ने कहा है कि हम सरकार से गुजारिश करते हैं कि तत्काल ही सभी सामाजिक सुरक्षा पेंशनधारियों की पेंशन प्रतिमाह 2 हजार रुपए जाए। इस मौके पर सोनम, उर्मिला, सुलोचना, देवकी, पार्वती, कुंदन लाल, मनोहर लाल, सुनील कुमार सहित कई लोग उपस्थित थे।

कृषि उपज मंडी चार दिन बंद

बैतूल। बैतूल कृषि उपज मंडी आज 19 से 22 मार्च तक चार दिनों के लिए बंद रहेगी। इस अवधि में सभी प्रकार की नीलामी और खरीदी-बिक्री पूरी तरह से बंद रहेगी। मंडी प्रबंधन के अनुसार, 19 मार्च को गुड़ी पड़वा, 20 मार्च को चैत्र नवरात्रि (चैतीचंड), 21 मार्च को इंदुल फितर और 22 मार्च को साप्ताहिक अवकाश (रविवार) के कारण मंडी बंद रहेगी। मंडी अब सीधे सोमवार को खुलेगी। अवकाश के दौरान मंडी परिसर में किसी भी प्रकार की गतिविधि की अनुमति नहीं होगी।

एचपीवी वेक्सीनेसन का सेमरी हरचंद में निरीक्षण, सोहागपुर ब्लाक में 332 वेक्सीनेसन किए गए

सोहागपुर। ग्राम सेमरी हरचंद उप स्वास्थ्य केन्द्र का अनुविभागीय अधिकारी प्रियंका भल्लावी केन्द्र में हो रहे एचपीवी वेक्सीनेसन के दौरान निरीक्षण किया। इस अवसर पर ब्लाक मेडीकल आफीसर डॉ रेखा गौर, तहसीलदार आर एस झरबड़े आदि उपस्थित थे। सोहागपुर ब्लाक के सेमरी हरचंद उप स्वास्थ्य केन्द्र, ग्राम शोभापुर उप स्वास्थ्य केन्द्र एचपीवी वेक्सीनेसन एवं सोहागपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में एचपीवी वेक्सीनेसन किए जा रहे हैं। ब्लाक मेडीकल आफीसर डॉ रेखा गौर ने बताया कि आज ग्राम शोभा पुर में 39.0 ग्राम सेमरी हरचंद में 31 एवं सोहागपुर में 57 एचपीवी वेक्सीनेसन किए गए। सोहागपुर ब्लाक में टोटल 332 एचपीवी वेक्सीनेसन किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि विगत दिवस जनपद पंचायत कार्यालय में एचपीवी वेक्सीनेसन को लेकर बैठक आयोजित की गई थी। जिसमें में अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सुश्री प्रियंका भल्लावी की अध्यक्षता में

किशोरी बालिकाओं का टीकाकरण शत-प्रतिशत पूर्ण कराने हेतु महिला बाल विभाग से सीडीपीओ सुपरवाइजर, शिक्षा विभाग से शासकीय एवं निजी स्कूलों के प्राचार्य, शिक्षक स्वास्थ्य से आशा एएनएम की एचपीवी वैक्सीन अभियान के लक्ष्य पूर्ति हेतु अंतर्विभागीय बैठक आयोजित की गई थी। इस अवसर पर बीएमओ डॉ रेखा गौर ने बताया कि एचपीवी वायरस महिलाओं में होने वाले सर्वाइकल कैंसर (गर्भाशय ग्रीवा कैंसर) का प्रमुख कारण है। इस बीमारी की रोकथाम के लिए एचपीवी टीका अत्यंत प्रभावी और सुरक्षित है। जिले में महिलाओं को सर्वाइकल कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से बचाने के उद्देश्य से सोहागपुर नगर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा संचालित एचपीवी (ह्यूमन पैपिलोमा वायरस) टीका सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सोहागपुर में अवकाश के दिनों को छोड़कर प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से 2 बजे तक लगाए जा रहे हैं। एसडीएम सुश्री भल्लावी ने महिला बाल विकास एवं शिक्षा विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया था कि वे 14 वर्ष आयु पूर्ण तथा 15 वर्ष पूर्ण ना हुई हों ऐसी बालिका हितग्राहियों की सूची बीएमओ को उपलब्ध कराते हुए अभिभावकों से अपनी बेटियों को एचपीवी वेक्सीनेसन टीकाकरण करवाने के लिए प्रेरित करें, साथ ही इस अभियान में सक्रिय सहभागिता के लिए बालिकाओं के स्वस्थ भविष्य के लिए बिना किसी डर और भ्रांति के टीकाकरण कराने की अपील की थी। वहीं कहा गया था कि बालिका की आयु संबंधी किसी भी दस्तावेज और मोबाइल नंबर साथ लाना अवश्य है।

ग्राम रानी पिपरिया में बिजली विभाग के रवैये से नाराज़ ग्रामीणों ने किया चक्काजाम, आखिर जोड़ी बिजली

सोहागपुर। सोहागपुर ब्लाक के ग्राम रानी पिपरिया में आज बिजली विभाग के रवैये से नाराज़ ग्रामीणों ने पिपरिया नर्मदापुरम राज्य मार्ग 22 पर चक्काजाम कर दिया।

इससे करीबन एक घंटे से अधिक समय तक जाम रहा। इस जाम से दोनों तरफ वाहनों की लम्बी कतारें लग गई। आज ग्रामीणों को गुस्सा तब आया जब विधुत विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने धन्याड परिवारों एवं सत्ता से जुड़े लोगों की बिजली न काटकर ग्राम के करीबन 75 प्रतिशत ग्रामीण जो एक एक दो दो एकड़ जमीन पर सब्जी की खेती आदि करते हैं उनकी बिजली बिल जमा नहीं होने पर बिजली काट दी। इससे ग्रामीणों में आक्रोश फैल गया।कि सत्ता से जुड़े एवं धनी नागरिकों को छोड़कर गरीबों पर ही विभाग की कार्यवाही चली। इससे ग्राम रानी पिपरिया के बच्चे, क्या युवक ,क्या युवतियां, क्या महिलाएं पानी के बर्तन लेकर प्रशासन के विरुद्ध प्रदर्शन करने लगे।

यहां जमकर शासन के खिलाफ नारेबाजी की गई।इसी बीच रास्ते से जा रहे कांग्रेस के प्रत्याशी रहे पुष्पराज सिंह पटेल भी ग्रामीणों के समर्थन में रास्ते में बैठ गए। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि इस समय बच्चों की परीज्ञा चल रही है। ऐसी गर्मी में बिजली काटना उचित नहीं है। हम बिजली का जल्दी ही भुगतान कर देंगे। लेकिन हम गरीबों की बिजली काट दी गई। लेकिन सत्ता से जुड़े लोगों की बिजली नहीं काटी।यह दोहरी नीति नहीं चलेगी।जब तक बिजली नहीं जोड़ी जाएगी।हम रास्ते से नहीं हटेंगे।इस सूचना मिलते ही नगर निरीक्षक उषा मरावी सोहागपुर एवं ग्राम शोभा पुर चौकी प्रभारी सुरेश चौहान,नायब तहसीलदार चक्काजाम स्थल पर पहुंचे।

नव संवत्सर का अभिनंदन

डॉ. जीवन एस. रजक

चैत्र की प्रथम प्रभा में
जब सूर्य, पृथ्वी के माथे पर
एक नई किरण लिखता है
तब समय के हृदय में
नव स्पंदन होने लगता है

वृक्षों की कोपलों में
एक मौन घोषणा होती है
खालीपन को, फिर से भरे जाने की
समापन के बाद नवारंभ की
और हर अंधकार के बाद
जीवन फिर से लौट आने की

यह वह दिन है
जब ब्रह्मा ने
सृष्टि के प्रथम स्वप्न को आकार दिया
और समय की धारा में
जीवन का पहला बीज बोया
यह उस स्मरण का दिन है
जिसमें मनुष्य अपने भीतर
एक नई सृष्टि रच सकता है

हमारी सभ्यता ने
समय को केवल गणना नहीं माना
एक चेतना कहा
जो सूर्य के तेज में
चंद्रमा की शीतलता में
और पृथ्वी के स्पंदन में
संतुलित होकर बहती है
आज का संसार
अस्थिरताओं से भरा है
युद्ध का कोलाहल
मानवता की करुण ध्वनि को दबा रहा है
लालच, भय, अशांति और अहिंसा
सभ्यता के संतुलन को डिगा रहे हैं

पृथ्वी भूगोल नहीं, परिवार है
शक्ति का स्वरूप विजय नही, संवेदना है
ज्ञान का स्वर अहंकार नहीं, करुणा है
सभ्यता का लक्ष्य प्रभुत्व नहीं, समन्वय है
और मनुष्य केवल जाति, धर्म और भाषा नहीं है
एक साझा आध्यात्मिक चेतना है
इसलिए मनुष्य का वास्तविक उत्कर्ष
दूसरों को पराजित करने में नहीं
सबको साथ लेकर चलने में है

आज जब नव संवत्सर का अभिनंदन
समय के पृष्ठ पर अंकित हो रहा है
तब यदि मनुष्य अपने भीतर
करुणा, शांति और सद्भाव का दीप जलाएगा
तो निश्चित ही
इस सुंदर पृथ्वी का भविष्य
अनंत प्रकाश से सराबोर हो जाएगा।

जोरदार बारिश से होगा नवरात्र का स्वागत!

पांच मौसमी सिस्टम सक्रिय, मप्र के इन 19 जिलों में बारिश-आंधी का अलर्ट

भोपाल (नप्र)। देश के अधिकांश हिस्सों में मौसम के एक साथ 5 सिस्टम एक्टिव हो गए हैं। इनका सीधा असर एमपी पर पड़ रहा है। मंगलवार-बुधवार की रात से इसका असर देखने को मिल रहा है। बालाघाट जिले में एक इंच बारिश दर्ज गई है। वहीं राजधानी भोपाल सहित प्रदेश के 13 जिलों में बारिश का अलर्ट दिया गया है। नवरात्र की शुरूआत में प्रदेश के मौसम में ठंडक घुली रहेगी।

आजकल देश का मौसम एकदम से बदला है। पहाड़ों पर बर्फवारी के बाद अब मैदानी इलाकों में बारिश का दौर बना है। आसपास के प्रदेशों सहित मध्य प्रदेश के सीमावर्ती इलाकों में बारिश का दौर शुरू हो गया है। नवरात्र की शुरूआत कई इलाकों में झमाझम बारिश से होने जा रही है। बालाघाट में बीते 24 घंटों में एक इंच बारिश हो गई। राजधानी भोपाल सहित इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर और उज्जैन में भी मौसम बदलने वाला है। प्रदेश के अलग-अलग इलाकों में एक के बाद एक अर्थात आईसोलेटेड बारिश का दौर चलता रहेगा।

मौसम के एक साथ 5 सिस्टम एक्टिव हैं- मौसम विभाग से मिली जानकारी अनुसार वर्तमान में मौसम के एक साथ पांच सिस्टम सक्रिय हैं। इनमें मध्य प्रदेश के मध्य भागों के ऊपर समुद्र तल से 0.9 किमी ऊंचाई पर ऊपरी हवा का चक्रवातीय सिस्टम सक्रिय है। इसी प्रकार एक ट्रफ दक्षिण पूर्व राजस्थान से उत्तर छत्तीसगढ़ तक और

एमपी के मध्य भागों के ऊपर चक्रवाती सिस्टम काम बना है। तीसरे सिस्टम की बात करें तो पूर्वी उत्तर प्रदेश और निकटवर्ती क्षेत्रों के ऊपर चक्रवाती सिस्टम सक्रिय है।

एक ट्रफ मध्य प्रदेश के मध्य भागों के ऊपर से सक्रिय है। यह मराठवाड़ा और विदर्भ होते हुए उत्तरी आंतरिक कर्नाटक तक बना है। पांचवे सिस्टम की बात करें तो पश्चिमी विक्षोभ जिसे वेस्टर्न डिस्टर्बेंस कहा जाता है। यह मध्य और ऊपरी हवाओं के ट्रफ के रूप में समुद्र तल से 5.8 किलोमीटर ऊंचाई पर उत्तरी इलाके में काम कर रहा है।

19 जिलों में बारिश-तेज आंधी और गाज गिरने का अलर्ट- मध्य प्रदेश मौसम विभाग द्वारा 19 जिलों में अगले 24 घंटों में बारिश का अलर्ट दिया गया है। इनमें राजगढ़, आगर, मंदसौर, नीमच, गुना, अशोकनगर, शिवपुरी, ग्वालियर, दतिया, भिंड, मुरैना, श्योरपुरकलां, डिंडौरी, छिंदवाड़ा, सिवनी, मंडला, बालाघाट, निवाड़ी, पांढुर्णा जिलों बारिश का अलर्ट है। बारिश के साथ ही साथ तेज आंधी, वज्रपात और तेज हवाओं व आसमानी बिजली का अलर्ट भी है।

डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन, मौसम विज्ञानी, भोपाल ने बताया कि एमपी सहित आसपास के क्षेत्रों में मौसम के अलग-अलग सिस्टम एक्टिव हैं। इस कारण प्रदेश में डेढ़ दर्जन से अधिक जिलों में बारिश का अलर्ट दिया गया है। 22 तारीख का आइसोलेटेड बारिश का दौर चलेगा। तापमान में भी गिरावट आएगी

कब कहां बारिश होगी

18 मार्च को प्रदेश के नीमच, मंदसौर, श्योपुर, मुरैना, भिंड, ग्वालियर, दतिया, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, बालाघाट, मंडला जिलों में बारिश हो सकती है। 19 मार्च को एमपी के भिंड, मुरैना, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, श्योपुर, गुना, राजगढ़, आगरमालवा, शाजापुर, सिहोर, नर्मदापुरम, नीमच, मंदसौर, रतलाम, उज्जैन, शाजापुर, देवास हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, इंदौर, बड़वानी, धार, अलीराजपुर, झाबुआ, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला, डिंडौरी, बालाघाट जिलों में आईसोलेटेड बारिश हो सकती है। 20 मार्च को प्रदेश के श्योपुर, मुरैना, भिंड, ग्वालियर, दतिया, शिवपुरी, निवाड़ी, टीकमगढ़, छतरपुर, पन्ना, दमोह, सागर, सतना, मैहर, कटनी, उमरिया, रीवा, मउगंज, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर, डिंडोरी, उमरिश, दमोह, जबलपर, मंडला, बालाघाट, सिवनी, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, नरसिंहपुर, नर्मदापुरम, रायसेन, सिहोर, भोपाल, विदिशा, अशोकनगर, शाजापुर, राजगढ़, गुना सहित आसपास के इलाके में बारिश होगी।

मध्य प्रदेश की 22.77 लाख महिलाएं लखपति दीदी बनीं

देश के टॉप-5 राज्यों में चौथे नंबर पर, पिछले साल आठवें स्थान पर था मध्य प्रदेश

भोपाल (नप्र)। महिला सशक्तिकरण की दिशा में मध्य प्रदेश देश के अग्रणी राज्यों में अपनी जगह पक्की कर रहा है। केंद्र सरकार द्वारा जारी ताजा आंकड़ों (31 दिसंबर 2025 तक) के अनुसार, मध्य प्रदेश में 'लखपति दीदी' योजना के तहत 22,77,814 महिलाएं लखपति बन चुकी हैं। मध्य प्रदेश देश में सबसे ज्यादा लखपति दीदी वाले राज्यों की सूची में चौथे नंबर का राज्य बन गया है। संसद में एक सवाल के जवाब में ये जानकारी सामने आई है। एक साल पहले मध्य प्रदेश लखपति दीदी के मामले में आठवें नंबर का राज्य था।

नमो ड्रोन दीदी को सरकार ने दिए 34 ड्रोन- आधुनिक खेती और तकनीक के क्षेत्र में भी मध्य प्रदेश की महिलाएं पीछे नहीं हैं। नमो ड्रोन दीदी योजना के तहत मध्य प्रदेश को 34 ड्रोन उपलब्ध कराए गए हैं, जो इसे देश में तीसरे स्थान (आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के बाद) पर खड़ा करता है।

एमपी के 89 स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं ने ड्रोन से संबंधित प्रमाणित तकनीकी प्रशिक्षण प्राप्त किया है, जिससे वे अब खेतों में लिक्विड फर्टिलाइजर (तरल उर्वरकों) और कीटनाशकों का छिड़काव ड्रोन के जरिए कर रहीं हैं।

सिंहस्थ-2028 के लिये एम.पी. ट्रांसको के कार्य एक वर्ष पूर्व पूर्ण करने का लक्ष्य, हो रही है नियमित मॉनिटरिंग : ऊर्जा मंत्री तोमर

भोपाल (नप्र)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने जानकारी दी है कि राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक सिंहस्थ-2028 के सफल एवं सुव्यवस्थित आयोजन को ध्यान में रखते हुए मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी उज्जैन क्षेत्र में अपनी पारेषण (ट्रांसमिशन) प्रणाली को सुदृढ़ एवं विश्वसनीय बनाने के लिए विशेष कार्ययोजना पर तेजी से कार्य कर रही है। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने बताया कि कंपनी के प्रबंध संचालक श्री सुनील तिवारी को स्पष्ट निर्देश दिए गए हैं कि सिंहस्थ-2028 से संबंधित सभी कार्य आयोजन तिथि से कम से कम एक वर्ष पूर्व पूर्ण कर लिए जाएं। इससे पारेषण तंत्र की स्थिरता, विश्वसनीयता एवं आपूर्ति की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त परीक्षण एवं सुधार का समय मिल सकेगा। उन्होंने बताया कि इन निर्देशों के परिपालन में प्रबंध संचालक श्री सुनील तिवारी स्वयं कार्यों की सतत मॉनिटरिंग कर रहे हैं। वरिष्ठ अधिकारियों को भी निर्देशित किया गया है कि वे नियमित रूप से प्रगति की समीक्षा करें तथा सभी कार्य निर्धारित समय सीमा में उच्च गुणवत्ता मानकों के अनुरूप पूर्ण करें।

चिंतामन सबस्टेशन का निर्माण कार्य प्रारंभ- सिंहस्थ अवधि में निर्बाध एवं गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से प्रथम चरण में 132 के.व्ही. चिंतामन सबस्टेशन के निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।इसके अलावा उज्जैन- चंद्रावती गंज एवं देपालपुर-चिंतामन 132 के वी ट्रांसमिशन लाइन का लाइन इन लाइन आउट कार्य भी प्रगति पर है। इसके साथ ही त्रिवेणी विहार क्षेत्र से संबंधित विद्युत अवसंरचना कार्य भी तेजी से प्रगति पर हैं, जिससे स्थानीय लोड प्रबंधन में सुधार होगा।

शंकरपुर सब स्टेशन में क्षमता वृद्धि- उज्जैन क्षेत्र के 220 के.व्ही. शंकरपुर सबस्टेशन में पूर्व में स्थापित 20 एम.व्ही.ए. क्षमता के ट्रांसफार्मर को अपग्रेड कर 50 एम.व्ही.ए. क्षमता का नया ट्रांसफार्मर स्थापित किया जा चुका है। इस उन्नयन से क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी तथा संभावित अतिरिक्त मांग को सहजता से पूरा किया जा सकेगा।

राज्यसभा में दिग्विजय का विदाई भाषण, अटल जी की पंक्तियां दोहराईं

बोले- न मैं, टायर्ड हूं, न रिटायर्ड हूं, आगे और काम करेंगे

भोपाल (नप्र)। अगले तीन महीनों (अप्रैल से जुलाई के बीच) में राज्यसभा से रिटायर हो रहे 59 सांसदों को आज राज्यसभा में विदाई दी गई। इस दौरान एमपी से कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य दिग्विजय सिंह ने भी विदाई भाषण दिया।

पूर्व पीएम अटल जी की लाइनें सुनाईं- दिग्विजय सिंह ने राज्यसभा में कहा मैंने अपने राजनीतिक जीवन में अपना रास्ता खुद तय किया है। मैं कांग्रेस पार्टी का आभारी हूं जिन्होंने मुझे हर सदन में आने का मौका दिया।

आज इस अवसर पर अटल जी की वो बात याद आती है कि मैं न टायर्ड हूं न रिटायर्ड हूं। आगे चलकर हम और काम करेंगे। मैं उन सदस्यों के प्रति आभार प्रकट करता हूं जिन लोगों ने मेरे लिए अच्छे शब्दों का प्रयोग किया।

भाषण के अंत में बोले- न काहू से दोस्ती न काहू से बैर

दिग्विजय अपने विदाई भाषण में करीब 5 मिनट बोले। अपने भाषण के अंत में उन्होंने कबीरदास जी की पंक्तियां दोहराई। दिग्विजय ने कहा मैं अपने राजनीतिक जीवन में जैसा कबीरदास जी कह गए थे उन पंक्तियों पर चलता हूं।

कबिरा खड़ा बाजार में मांगे सबकी खैर
न काहू से दोस्ती न काहू से बैर

22 साल की उम्र में नपाध्यक्ष बन गया- दिग्विजय सिंह ने कहा कि लोगों को इस बात का आश्चर्य होगा कि छात्र जीवन में मेरा राजनीति से कोई संपर्क और संबंध नहीं था। कुछ परिस्थितियां इस प्रकार की बनीं कि मैं 22 साल की उम्र में सर्वसम्मति से नगर पालिका अध्यक्ष बन गया। 30 साल की उम्र में विधायक और 33 साल की उम्र में मंत्री बन गया, सांसद बन गया और 46 साल की उम्र में मुख्यमंत्री बन गया, लेकिन मैं हमेशा अपनी विचारधारा के मार्ग पर चला। कभी विचारधारा के साथ समझौता नहीं किया।

किसी से कटुता नहीं पाली

दिग्विजय ने कहा- मैंने अपने राजनीतिक जीवन में कभी किसी से कटुता नहीं पाली। मतभेद होते थे विचारधारा में मतभेद होंगे, लेकिन मनभेद होने का मैंने कभी मौका नहीं दिया। हो सकता है कि मेरे भाषण में कई बार कटुता आई हो किसी को बुरा लगा हो उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूं।

जिनकी विचारधारा से सहमत नहीं, उनसे भी अच्छे संबंध- दिग्विजय ने कहा- मैं इतना कह सकता हूं कि चाहे मप्र की विधानसभा में हो लोकसभा में हो चाहे यहां राज्यसभा में हो। मेरे संबंध उन लोगों के साथ भी बहुत अच्छे रहे हैं जिनकी विचारधारा से मैं कभी सहमत न था न हूं और न रहूंगा। जहां तक कॉमरेड्स का सवाल है। उनके कार्यसंचालन में कोई बात हो सकती है, लेकिन इनकी गरीबों के पक्ष में जो विचारधारा रहती है मैंने उसका हमेशा समर्थन किया है।

अटल जी, राजीव गांधी के साथ लोकसभा में रहा

मेरा सौभाग्य है कि मैं उस लोकसभा में भी रहा जिसमें अटल जी, राजीव जी, चंद्रशेखर जी भी थे। इंदिरा जी ने मुझे कांग्रेस में प्रवेश दिया। इन लोगों से प्रभावित होकर मैंने अपना राजनीतिक सफर पूरा किया है। सदन में जो डिस्टर्बेंस होते हैं मैं कभी भी उसके पक्ष में नहीं रहा। लोकतंत्र की बुनियाद है चर्चा और सदन में ये सत्तापक्ष की जवाबदारी होती है कि वो विपक्ष के साथ चर्चा होने के बाद और कोई रास्ता निकालें। इस सदन में हमारे अंसारी साहब भी चेयरमैन रहे हैं। उन्होंने कोई भी बिल दिन में पास होने का मौका नहीं दिया। रास्ता निकलता है यही लोकतंत्र की बुनियाद है जिसमें आज कमी देखने को मिलती है। आज इस देश में जिस प्रकार से साम्प्रदायिक कटुता, मनमुटाव बढ़ता जा रहा है ये देश के लिए उचित नहीं हैं। न हमारे संस्कार और संस्कृति न लोकतंत्र और भारतीय संविधान के लिए उचित है।

गोमांस तस्कर असलम की बेल पर सेशन कोर्ट में सुनवाई

हिंदू संगठन बोले- जमानत मिली तो सड़कों पर उतरेंगे हजारों हिंदू, रासूका लगाने की मांग

भोपाल (नप्र)। भोपाल में गोमांस तस्करी के मामले में आरोपी असलम कुरैशी उर्फ चमड़ा को लोअर कोर्ट से राहत नहीं मिलने के बाद उसके एडवोकेट ने सेशन कोर्ट में जमानत अर्जी लगाई। जिस पर बुधवार दोपहर को सुनवाई जारी है। बता दें कि न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी जयदीप मौर्य ने बीते शुक्रवार को अपराध की गंभीरता को देखते हुए आरोपी की जमानत याचिका निरस्त कर दी थी।

सुनवाई के दौरान आरोपी के अधिवक्ता ने कोर्ट से कहा कि असलम कुरैशी निर्दोष है और उसे जमानत दी जानी चाहिए। वहीं शासकीय अधिवक्ता ने मामले की गंभीरता का हवाला देते हुए जमानत आवेदन खारिज करने का अनुरोध किया। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद कोर्ट ने जमानत अर्जी खारिज कर दी। मामले में पुलिस की एसआईटी ने जांच पूरी करने के बाद 6 मार्च को आरोपी असलम कुरैशी और उसके ड्राइवर शोएब के खिलाफ करीब 500 पेज का चालान न्यायालय में पेश किया था।

सड़कों पर उतरकर प्रदर्शन की चेतावनी- असलम के गो मांस से भरे कंटेनर को पकड़ने वाले जय मां भवानी संगठन के प्रमुख भानू हिंदू ने बताया कि जिला एवं सत्र न्यायालय में असलम की जमान पर बहस चल रही है। यदि उसे जमानत दी जाती है तो 100 करोड़ हिंदूओं की भावनाओं को ठेस पहुंचेगी। भोपाल के तमाम युवा हिंदू और महिलाएं सड़कों पर उतरेंगे और इसका विरोध करेंगे। लिहाजा उन्होंने अनुरोध किया है कि यदि असलम को बेल मिल भी जाती है तो उसे रासूका लगाकर जेल में रखना चाहिए।

भोपाल की नई गाइड लाइन पर मंत्री-विधायकों की आपत्ति

100 इलाकों में 50 प्रतिशत से ज्यादा बढ़ाने का प्रस्ताव, मीटिंग में उठेगा मुद्दा

भोपाल (नप्र)। भोपाल में प्रॉपर्टी की नई गाइड लाइन को लेकर बुधवार को जिला मूल्यांकन समिति की बैठक होगी। जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में होने वाली बैठक में गाइड लाइन पर फाइनल मुहर लगेगी। इसके बाद प्रस्ताव राज्य स्तरीय कमेटी को भेजा जाएगा और फिर सीएम डॉ. मोहन यादव अंतिम निर्णय लेंगे। वर्तमान में प्रस्तावित गाइड लाइन को लेकर आम जनता से लेकर मंत्री-विधायकों तक को आपत्ति है। 100 से ज्यादा इलाकों में रेट 50 प्रतिशत या इससे ज्यादा बढ़ाने से उनकी नाराजगी है।

आज शाम को कलेक्टोरेट में होने वाली बैठक में यह मुद्दा उठेगा। बता दें कि इस साल भोपाल की 621 प्राइम लोकेशन्स पर प्रॉपर्टी की गाइडलाइन दरें बढ़ाने का प्रस्ताव आया है। इसका सीधा मतलब है कि रजिस्ट्री महंगी होगी। स्टांप ड्यूटी का खर्च भी बढ़ जाएगा। ऐसे में महंगाई के इस दौर में अपना घर खरीदने का सपना देखने वालों को अब पहले से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है।

इन इलाकों में सबसे ज्यादा बढ़ेंगे रेट- जानकारी के अनुसार निर्मल सिटी, निशातपुरा रोड, मुर्गी बाजार, समर ग्रीन में 181 प्रतिशत बढ़ोतरी का प्रस्ताव है। वहीं, यशोदा नगर, भोपाल टॉकीज से सेफिया रोड, मालीपुरा,

माया विहार, पाल विहार, रेत घाट से वीआईपी रोड, कबाड़खाना, गौतम नगर, पंचशील नगर, न्यू मार्केट, रोशनपुरा, सेवनिया गौंड, चौकी बरखेड़ी, एयरोसिटी परिसर, बेहटा, दामखेड़ा समेत में रेट बढ़ेंगे।

इसके अलावा कोलार रोड, बंजारी, अकबरपुर, बावड़ियाकलां, मिसरोद, एयरपोर्ट, अयोध्या बायपास में भी गाइड लाइन बढ़ाने का प्रस्ताव है।

भौंरी क्षेत्र में 58 प्रतिशत कटौती का प्रस्ताव- एक ओर जहां सैकड़ों इलाकों में प्रॉपर्टी के रेट बढ़ाने का प्रस्ताव है। वहीं, दूसरी ओर भौंरी क्षेत्र में गाइड लाइन को 58 प्रतिशत तक कम करने का प्रस्ताव भी लाया जा रहा है। किसानों का कहना है कि जहां सरकार के बड़े प्रोजेक्ट हैं, वहां पर रेट घटाना समझ से बाहर है। भौंरी क्षेत्र की 3700 एकड़ में प्रदेश की पहली एआई एंड नॉलेज सिटी प्रस्तावित है। इसे लेकर किसानों ने भोपाल कलेक्टर के पास जाकर आपत्ति भी दर्ज कराई थी।

इतनी लोकेशन का ड्राफ्ट जारी- कुल 2175 लोकेशन का ड्राफ्ट जारी किया गया है। नगर निगम सीमा में 607 लोकेशन पर प्रॉपर्टी के रेट 5प्रतिशत से लेकर 181 प्रतिशत तक बढ़ाने का प्रस्ताव है।

पंजीयन विभाग ने 628 लोकेशन पर दरें बढ़ाने और 795 लोकेशन को मर्ज करने का प्रस्ताव दिया है, जिससे इन क्षेत्रों में भी दाम बढ़ेंगे। ड्राफ्ट के अनुसार नगर निगम क्षेत्र में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी भानपुर स्थित निर्मल सिटी में प्रस्तावित है, जहां दर 6400 रुपए प्रति वर्गमीटर से बढ़ाकर 18 हजार रुपए की गई है, यानी 181 प्रतिशत तक वृद्धि।

लगातार दूसरे साल गाइडलाइन बढ़ाने की तैयारी

भोपाल जिला मूल्यांकन समिति 12 महीने में दूसरी बार गाइडलाइन बढ़ाने की तैयारी में है। इसके पहले 1 हजार 312 लोकेशन पर औसत 11 प्रतिशत गाइडलाइन बढ़ाई थी। इनमें सुल्तानिया रोड, गांधीनगर, दानिश हिल्स, मैकेनिकल मार्केट, नयापुरा, जहांगीराबाद समेत अन्य इलाके शामिल हैं।

विक्रम सम्वत् 2083
भारतीय नववर्ष
की हार्दिक मंगलकामनाएं

नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

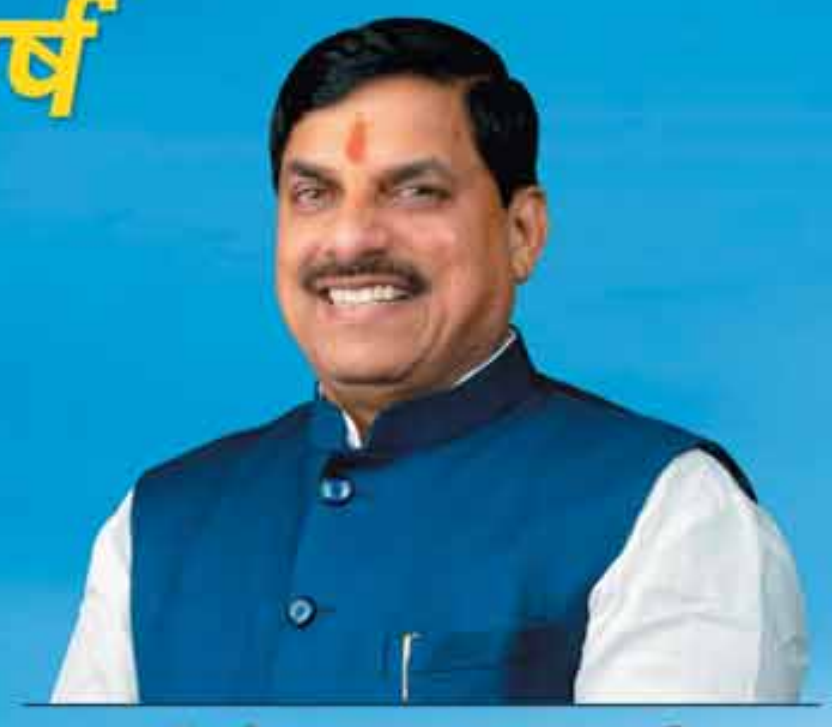

डॉ. मोहन यादव, मुख्यमंत्री

राज्यस्तरीय
जल गंगा संवर्धन अभियान
जनभागीदारी की अनूठी पहल का
तृतीय चरण : 19 मार्च से 30 जून 2026

शुभारंभ
मुख्यमंत्री
डॉ. मोहन यादव
द्वारा
इस्कॉन मंदिर, इंदौर

पिछले दो चरणों में 3.50 लाख से अधिक जल स्रोतों के पुनर्जीवन के साथ नए निर्माण कार्य, भू-जल स्तर में वृद्धि और खेतों के लिए संजीवनी साबित हो रहे हैं

आइये, सब जुड़ें
जब सब जुड़ेंगे, तब ही जल बचेगा, धरती बचेगी
आने वाली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित होगा

D-11222/25

सीधा प्रसारण @Cmmadhyapradesh @jansampark.madhyapradesh @Cmmadhyapradesh @jansamparkMP JansamparkMP

डॉ. मोहन यादव अभ्युदय मध्यप्रदेश